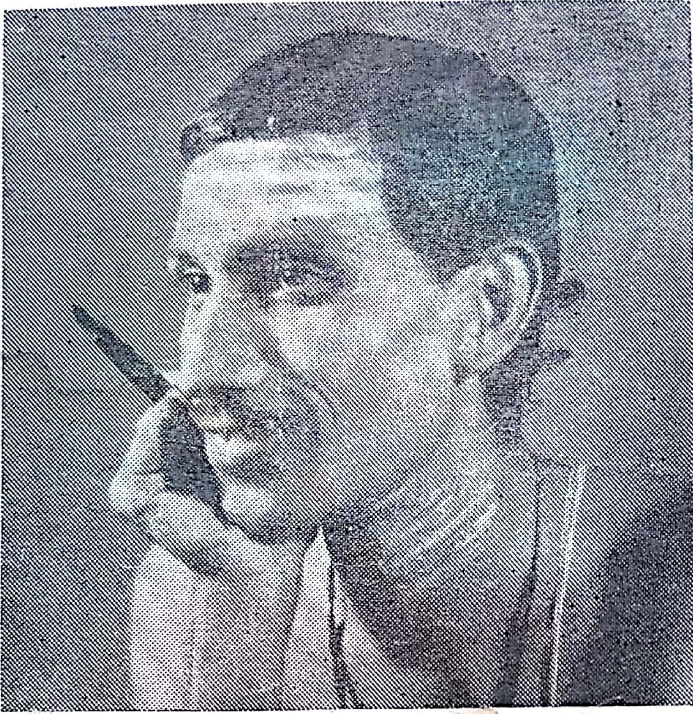
वीर कन्या



लेखक—श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'



लेखक



"कौलिकतेँ ई वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, रुचिएँ कवि एवं साधने पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक—अमरजीक परिचय एक वाक्यमे यैह देल जा सकैछ।"

नवरत्न-गोष्ठीक पांचम पुष्प

वीरकन्या

(सामाजिक उपन्यास)

●

लेखक

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

'गुदगुदी'
'त्रिफला'
'युगचक्र'
क
रचयिता

●

[एम० एल० एकेडमी, लहेरियासराय; दरभङ्गा]



प्रथम संस्करण  नवरत्न - गोष्ठी, दरभङ्गा  मूल्य ।।।)

प्रकाशक
नवरत्न-गोष्ठी,
दरभङ्गा



मुद्रक
श्रीभूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस, दरभङ्गा

परिचय—

गंडकी-कौशिकी ओ कमला-वाग्वतीक जलसँ सिक्त मिथिलाक अन्नपूर्णाकेँ पूजित बनैबाक हेतु जतबे आवश्यकता वैज्ञानिक उपादानक अछि, ततबे विद्यापति-गोविन्ददास ओ चन्दाझा-हर्षनाथक कृतिसँ सरस मिथिलाक भाषा-साहित्यकेँ लोकप्रिय बनैबाक हेतु नवयुगक उपयुक्त रचनाक। एहि मर्मकेँ हृदयङ्गम करैत अपन साधना सँ मातृभाषाक वैभववृद्धिमे जे साधक लोकनि प्रवृत्त छथि ताहिमे 'अमर'जी विशेष उल्लेखनीय थिकाह।

हिनक प्रतिभाक अरुणोदय 'गुदगुदी' मे परिलक्षित भेल। हिनक सरस सामयिक व्यंग्यक चमत्कार 'युगचक्र'मे देखल। 'त्रिफला'मे ई गल्प, एकाङ्की एवं पद्यात्मक चित्रण करैत पूर्ण सफल भेलाह। सम्प्रति 'वीरकन्या' नामक लघु उपन्यासक आदर्शानुप्राणित वास्तविकताकेँ राष्ट्रिय आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे उपन्यस्त करैत एक विन्यस्त रचनाक संग प्रस्तुत छथि। 'हाथ कांकन नहि आरसि काज' विद्यापतिक एहि लोकोक्तिकेँ दोहरबैत आशा करैत छी जे सहृदय पाठक एहि कृतिकेँ सस्नेह अपनौताह।

कौलिकतेँ ई वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, रुचिएँ कवि एवं साधने पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक—अमरजीक परिचय एक वाक्यमे यैह देल जा सकैछ। यद्यपि हिनक कृतिक प्रसिद्धि सभा-समितिक मञ्चसँ पुरस्कृत होइत रहल अछि किन्तु एकान्त साधनापृष्ठ हिनक लेखनी थीक।

माँ मैथिली एहि तरुण साधककेँ उत्तरोत्तर वर्धिष्णु करथु; आयुष्मान् 'अमर'जी अपन रचनासँ साहित्यक्षेत्रमे अमर बनथु; यैह कामना, यैह संवर्धना !

कर्क-संक्रान्ति
सं० २००७

श्रीसुरेन्द्र झा
'स्वदेश'-कार्यालय, दरभंगा

रामदेव झा

❀ दू अक्षर ❀

महाकाव्य, नाटक, उपन्यास एहि तीनूक रचना साधारणतः चरित्रक आधार पर होइछ। ओ चरित्र देवताक हो; मनुष्यक हो; राक्षसक हो अथवा पशुक। परन्तु एहि तीनू मे परस्पर बहुत अन्तर छैक।

महाकाव्य, एक अथवा एक सँ अधिक चरित्र लै प्रारम्भ होइत अछि। परन्तु प्रधानता चरित्रक नहिं रहि, वर्णनक भै जाइत छैक। जेना—कोनो मण्डप केँ सजैबाक होइछ तँ ओहि मे पल्लव लटकबैत छी; केराक थम्ह गाड़ैत छी। ओहि पल्लव केँ लटकैबाक हेतु बन्धन दैत छिऐक डोरी मे एवं बान्हल जाइत अछि डोरी, मुदा प्रधानता भै जाइत छैक पल्लव केर। चरित्र एक डोरी थिक, जाहि मे वर्णन रूपी पल्लव लटकैब महाकविक अभिप्रेत रहैछ। जेना महाकवि कालिदास यक्ष सँ अतिरिक्तो मेघदूतक नायक बना' मेघदूतक रचना कै सकैत छलाह। एक प्रेमी एक प्रेमिकाक विरह मे की सब कै सकैछ; ई यक्ष सँ अतिरिक्तो नायकक चरित्र आधार मानि कवि अपना कवित्वक परिचय दै सकैत छलाह।

उपन्यास मे कै गोट चरित्र लै सुन्दर कथानकक रचना करब लेखकक उद्देश्य होइछ; ओहि मे सफलताक हेतु चरित्रक विश्लेषण पूर्ण रूपें एहन कैल जाए, जाहि सँ पाठकक हृदय पर ओकर प्रभाव पड़ैक। प्रधानतः उपन्यासक दिस आकर्षण कथानकक विचित्रता पर निर्भर करैछ।

नाटक :—नाटक काव्य एवं उपन्यासक बीचक वस्तु होइछ; ओहिमे कथानकक विचित्रता चरित्रक संगठन एवं कवित्व शक्तिक परिचय तीनू देल जा सकैत अछि। किन्तु एकर बहुतो नियम अछि जाहि मे ओकरा बद्ध रहै पड़ैत छैक; जकर उल्लेख करब विषयान्तर हैत।

उपन्यास की थिक ? एहि प्रसङ्ग मे अनेको विद्वानक द्वारा अनेक परिभाषा कहल गेल अछि। मुदा बात ई अछि जे—जाहि वस्तुक जतेक परिभाषा सरल होइछ ततेक सरल ओ वस्तु नहिं। आ' जे वस्तु जेहन सरल, ओकर परिभाषा तेहने कठिन। कविताक परिभाषा आइ धरि जहिना निश्चित नहिं भेल अछि; जतेक विद्वान ततेक मत; ककरो मत सँ ककरो पूर्ण सामञ्जस्य नहिं। उपन्यासोक प्रसङ्ग ई कहब कोनो अत्युक्ति नहिं हैत।

तखन उपन्यास-सम्राट् स्वर्गीय प्रेमचन्दक शब्द मे हम कहब जे—"उपन्यास मानव चरित्रक एक एहन चित्र थिक जकरा देखला सँ मनुष्य अपना अन्तःकरण केँ टकटोरि सकैत अछि। मानव चरित्र पर प्रकाश देब एवं ओकरा रहस्यक उद्घाटन करबे उपन्यासक मूल तत्व थिक।"

जहिना पाञ्चभौतिक शरीर सभक रहितो स्वरूप मे भिन्नता अछि; तहिना चरित्रो मे। एही चरित्र सम्बन्धी समता ओ भिन्नता—अभिन्नत्व मे भिन्नत्व, भिन्नत्व मे अभिन्नत्व—देखैब उपन्यासक मुख्य कर्त्तव्य होइछ।

आब एहि ठाम प्रश्न उठि सकैत अछि जे उपन्यासकार केँ कोनो चरित्रक अध्ययन कै ओकरा यथावत् पाठकक समक्ष राखि देब कर्त्तव्य होइछ; अथवा अपना उद्देश्यक पूर्त्तिक हेतु काटि छाँटि अपन मनोनुकूल बना' पाठकक समक्ष राखथि ? एहि ठाम उपन्यासक दू भेद भै जाइछ; एक आदर्शवादी दोसर यथार्थवादी।

यथार्थवादी केँ एकर प्रयोजन नहिं रहैत छैक जे सच्चरित्रताक जँ परिणाम अधलाह हेतैक तँ लोकक मन सच्चरित्रता दिस सँ भटकतैक, अथवा दुश्चरित्रताक परिणाम नीक भेला सँ लोक केँ आकर्षण। ओ तँ अपना नायकक चरित्रक विशेषता एवं दुर्बलता देखबैत अपना उपन्यास केँ समाप्त कै दैछ। प्रकृतिक माया विचित्र छैक। एहन देखल गेलैक अछि जे केहन केहन धर्मात्मा, सदाचारीक जीवन दुखमय बितलैक अछि आ' केहन केहन दुराचारी, पापिष्ठक जीवन सुखमय।

यथार्थवादी अपना अनुभवक जिंजीर मे बान्हल रहैत अछि। संसारक गति अधोमुखी छैक। दुर्बल चरित्र कें आदर्श बनैब कठिन, मुदा आदर्शो चरित्र मे दुर्बलता देखैब सुलभ होइत छैक। दोसर संसारक एहन कोनो वस्तु नहिं जाहि मे किछु दोष नहिं देखबा मे औत।

यद्यपि यथार्थवादी सामाजिक कुप्रथाक दिस समाजक ध्यान नीक जकाँ आकृष्ट करैत अछि, परन्तु हमर दुर्बलता, क्रूरता तथा पैशाचिकता एवं विषमता ओकर अङ्कित कैल चित्र मे एहि प्रकारें चित्रित भै जाइछ जकरा देखला सँ मानव चरित्रक प्रति एक प्रकारक घृणा हमरा मन मे उत्पन्न होइत अछि जाहि सँ मानव चरित्र पर सँ हमर विश्वास उठि जाइछ। भविष्यक गर्त्त मे अन्धकारे-अन्धकार, नैराश्ये-नैराश्य देखना जाइछ, जाहि सँ हमर समाज हतोत्साह भै जीवन सँ उदास भै जाइत अछि। यथार्थवादी तँ कतहु-कतहु दुर्बलताक चित्रण करैत-करैत सीमा पार कै जाइछ। ओ हमरा चरित्रक दूषण उपस्थित करैत, अत्युक्तिक बिहाड़ि मे उड़ि जाइत अछि; ओकर प्रबल धारा मे भसिआ जाइत अछि। जेहो हमरा मे कम मात्रा मे पौल जाइछ तकरो शिष्टताक सीमाक ओहि-पार लै जा' धकेलि दैछ आ' अपन सफलता, अपन बहादुरी बुझैत अछि—जकर उदाहरण मैथिली-जगत मे बहुत भेटत; नाम लेब अनुचित थिक किन्तु ई हमरा जनैत आपत्ति-जनक थिक।

आदर्शवादी जेठक दुपहरिया मे रौदैल बटोहीक हेतु ओ पाकड़ि थिक जाहि तर गेला सँ मार्गजन्य श्रम सँ श्रान्तक हृदय शीतल भै जाइछ। सांसारिक दूषित वातावरण सँ अकछि जखन हम शान्ति चाहैत छी तखन ओ हमरा एक एहन अपूर्व चरित्र सँ परिचय करबैत अछि—जे स्वार्थ एवं वासना, ईर्ष्या एवं द्वेष, जन्म एवं मरणजन्य हर्ष, शोक, आदि सँ दूर रहैत अछि—जकरा पढ़ि किछु क्षणक हेतु हृदय मे शान्तिक अनुभव होइछ। यदि यथार्थवाद हमरा आँखिक पट्टी फोलि दैत अछि तँ आदर्शवाद एक एहन मनोरम दृश्य देखबैत अछि जे देखि हम आत्म-विभोर भै

जाइत छी। तखन आदर्शवादो मे जँ हम एहन कल्पना करी जे मानवक चरित्र सँ भिन्न हो; जाहि मे दोषक लेश नहिं रहै, तखन तँ हम ओकरा देवताक चरित्र कहि, ओकर एहि हेतु उपेक्षा करब जे हम मनुष्य छी देवता नहिं। एवँ प्रकारें ओहि चरित्र सँ प्रभावित नहिं भै सकैत छी। ओहि मे सांसारिक अनुभूति हमरा नहिं प्राप्त होइछ।

किन्तु उत्तम उपन्यास तँ ओकरा कहब जाहि मे यथार्थ रहितो आदर्शक हत्या नहिं भेल होइक। सांसारिक दूषण सँ परिचित करबैत ओहि सँ दूर हैबाक एहन सुलभ साधन देखा दैछ जाहि सँ हम प्रभावित भै उठैत छी। एकरा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहबैक।

प्रस्तुत उपन्यास की थिक तकर निरूपण तँ पाठक करताह। कारण, जाहि दूनू आँखिएँ हम समस्त संसार कें देखि लैत छी ताही दूनू आँखि सँ अपन स्वरूप देखबाक काल दर्पणक आवश्यकता भै जाइछ। तैं दर्पणक काज सुविज्ञ पाठक एवं समालोचक करताह, ई आशा राखि सम्मुख ई उपस्थित करैत छी। इत्यलम्॥

हरिशयन-एकादशी, १३५६ साल] —श्रीचन्द्रनाथ मिश्र

वीर-कन्या

ज्वाला

घोड़ाक लगाम मन्दिर दिस घुरबैत चिन्तामणि बाबू क्षुब्ध भेल मन्दिर में पहुँचलाह। अविराम-वारिधारासँ परिपूर्ण नयन युगल देखि हृदय में तारतम्य होमै लगलन्हि, मनहि-मन विचारै लगला—की एहि दुखीक दुःखक कारण बुझबाक चाही ? उदार हृदयक चित्तवृत्ति आनक दुःख देखि स्थिर रहब ओहने असम्भव थिक जेना पानि में आगि लागब।

कलुषमोचिनी कलकल निनादिनी कमलाक समीपवर्ती बालुक ढेरीक चकमकी सँ चकमकाइत, मन्द-मन्द तरङ्गक हिलोर पर बाल-दिवाकर अपन चञ्चल किरणावलीक प्रतिबिम्ब सँ कराल-वदना काली मन्दिरक शोभा द्विगुण-चतुर्गुण बढ़ा रहल छलाह। चिड़ै-चुनमुन्नी खोंते सँ महारानी उषाक लाल महफा सन प्राची दिशा कैँ देखि जेना दुरगमनिञा कनिञाक आगमनक अवसर पर गोसाउनिक गीत गाबि रहल हो तहिना चुनमुन-चुनमुन कै रहल छल। कृषक वर्ग अपन नित्यकृत्य करबाक हेतु शस्यपूर्णा वसुन्धराक श्यामल कोर में खेलाइत, ओंघड़ाइत; झुकैत शस्य-राशि कैँ देखि-देखि भावी जीवनक आशासूत्र में आबद्ध, सौंदर्यक सिन्धु में डुबकी लगा रहल छल। चरवाह सब अपन-अपन माल-जाल नेने बथान दिस जाइत प्राती गैबा में तल्लीन छल।

संसार-स्थित प्राणी नवीन शुभ्र प्रभात पाबि आनन्दे-आनन्द देखना जाइत छल। किन्तु मन्दिरक दुआरि पर बैसल खिन्न शरीर, विषण्ण हृदय, आयत ललाट, घाम सँ ओत-प्रोत, बेस श्रान्त, भगवतीक ओहि विकराल मूर्ति पर ध्यान लगौने नरेन्द्र संसारक एहि गति विधि सँ बहुतो दूर बैसल किछु प्रार्थना कै रहल छलाह—हा मातः! हम स्वर्ग सदृश जन्मभूमि, मर्यादा पुरुषोत्तम सन सहोदर, साकेतक प्रजा सन ओ गौरवमय समाज—जाहि समाज में हमर पूर्व पुरखा लोकनि अपन पुरुषत्व, अपन त्याग अपन बलिदान, अपन आचार ओ विचार, अपन संस्कृति ओ मर्यादा, जीवनक सुख तथा दुःख सभक अनुभव करैत जीवन-यापन ओ विसर्जन कैलन्हि—से सब त्यागि कै कतै ऐलहुँ ?

एहि निर्जन वन मे एकमात्र अहाँक आश राखि एहन कंटका-कीर्ण पथक पथिक हैब स्वीकार कैल। कथीक हेतु ?

एकमात्र उद्देश्य अपन देश, अपन समाज, अपन अधिकार एवं जन्मभूमिक रक्षाक हेतु परञ्च..... देवि! एक निरपराध ब्राह्मण कैं एहि रीतिएँ हलाल ..... एतबा कहैत नरेन्द्रक अश्रु-पूर्ण नयन सँ कमलाक धारा सदृश धारा बहै लागल। लगलाह हबोढकार भै कानै।

जाहि वेदनापूर्ण रुदन ध्वनिएँ साक्षात् जगज्जननीक हृदय डगमगा गेल ताहि ठाम साधारण एक मनुष्यक हृदयक स्थिति अनुभवक विषय अछि।

नरेन्द्रक ई आर्त्तनाद सुनि तत्क्षण पिघलि गेल जेना थोड़बो

आगिक संयोगेँ पिउ, ओ शान्त हृदय सहसा अशान्त भै उठल जेना उन्नैस सै ब्यालिसक भारतवर्ष, तरङ्ग सँ उद्वेलित हृदय ओहिना पछाड़ खा खसल जेना मेदिनी पुरक भयङ्कर बिहाड़ि सँ तत्समीपवर्ती जनता, आब क्षणमात्र ओहि उदार पुरुष कँ ओतै स्थिर रहब ओहिना असम्भव भै गेल जेना १३४१ क भूकम्प सँ पृथ्वीक, गम्भीर मुद्रा में मग्न ओ स्वरूप ओहिना बूझि पड़ै जेना एकाकार निरन्तर समाधि मग्न भारत-मुकुट गिरिराज हिमाञ्चल। चिन्तामणि बाबू पुछिए बैसलथिन्ह—अहाँ के थिकहुँ? हुनका मुँह सँ प्रश्नक धारा जेना छुटि गेल होइन्ह दोसर प्रश्न—अहाँ कें की भेल अछि? तेसर—विधाताक कोन एहेन अङ्कित अक्षर अहाँ कँ एहि विपत्ति सागर में धकेलि देलक? कहू भद्र! शीघ्र कहू, अहाँक ई विषम स्थिति हमरो ओहिना विषम बना देलक अछि जेना ज्वराक्रान्त मनुष्यक काँखतर पड़ला उत्तर 'थर्मा मीटर'क पारा चढ़ि ओकरो विषम बना दैछ।

अगम्य सागर सदृश गम्भीर हृदय, ओ विचार देखि नरेन्द्रक हृदय में कम आनन्द नहि भेलन्हि, परन्तु चिन्तामणि बाबूक आकस्मिक आगमन सँ विषादो कम नहि। आनन्दक कारण त छल जे एखनो धरि एहेन-एहेन महापुरुष एहि पुण्यभूमि कँ पुण्यमयी बना कै रखबा सँ बञ्चित नहि भेल छथि। आ' विषादक कारण छल जे सांसारिक वातावरण सँ क्लान्त एवं श्रांत भै एहि एकान्त स्थानक आश्रय धैल, एहि एकान्तो स्थान में हमरा हृदय कँ अशान्त करै एवं काज में बाधा स्वरूप ई कतै सँ

उपस्थित भै गेल। मनहि मन भारत-माता कें धन्यवाद दैत कहै लगलथिन्ह—मातः! अहाँक महिमा अपरम्पार अछि, अहाँक पुण्यक कोष अक्षय अछि, अहाँक कोखि धन्य अछि। आंखि पोछि चिन्तामणि बाबू दिस मूड़ी घुमा कहै लगलथिन्ह—महा पुरुष! अहाँ मनुष्य नहि देवता छी, एहि विकराल युग में एहेन उदारचेता मनुष्य कतै भेटत? निश्चय अपने सन-सन पुरुष अपना कर्तव्यक बलें देवता स्वरूप भै जाइत छथि। किन्तु एक विपद्ग्रस्तक संसर्ग सँ स्वयं विपद्ग्रस्त हैबाक कोन प्रयोजन अछि? संसार एक नाटक भै रहल अछि, जकरा जे कोनो कार्य भार देल गेल छैक से नाटकीय दृश्य प्रदर्शन में सब लागल अछि, क्यौ हँसैछ, क्यौ कनैछ, क्यौ गबैछ तँ क्यौ कुहरैछ, क्यौ नचैछ तँ क्यौ दुःख में तड़पैछ, एही क्रमे क्यौ दुखी अछि तँ क्यौ सुखी, एहि चक्रक गति एही रूपँ अनादि काल सँ चल अबैछ एवं अनन्तकाल धरि चलैत रहतैक, तखन व्यर्थ अहाँ अपनो जीवन कें हमर संकटमय जीवनक संसर्ग सँ संकटापन्न बनैब? अपन-अपन कर्मक फल प्राणी अपने पबैत अछि जखन निश्चिते सिद्धान्त छैक तखन अपन जीवन सुख सँ बिताउ गऽ जाउ।

परञ्च नरेन्द्रक एहि कथा सँ चिन्तामणि बाबू क्षुब्ध नहि भेलाह, ओ आरो आग्रह पूर्वक कहलथिन्ह—भद्र! ई कथा अहाँक सर्वथा सत्य, परञ्च मनुष्य सामाजिक प्राणी होइछ, एकक दुःख में दोसर यदि सहानुभूति नहि देखबौक तँ जीवन में निराशाक बोध होमै लगतैक। तैं हेतु जहिना अपना कर्मक फल-

अपने लोक पबैछ, ई सिद्धान्त कैल अछि तहिना एक दोसराक सुख दुख मे संग दैत ऐल छैक। यद्यपि एहि अधम सँ कोनो तरहक सान्त्वना भेटब असम्भवे, साधन हीन व्यक्ति परोपकारक वा कोनो प्रकारक मनोरथ मात्रे करैछ, तखन यदि अहाँक हृदय मे हमरा प्रति कनेको दया हो तँ हमरा आतुरताकेँ दूर करबाक हेतु अपना दुः खक कारण कहू।

नरेन्द्र एहि विनय पूर्ण बचन सँ झुकि गेलाह, आब हुनका नठब असम्भव भै गेलन्हि, ओ दीर्घ निश्वास लै चित्त जेना शान्त कैलन्हि। तदुत्तर सम्हरि कै बैसि अपन जीवनी प्रारम्भ कैलन्हि। चिन्तामणि बाबू साकांक्ष भै नरेन्द्रक आगू मे पल्था मारि बैसि गेलाह।

नरेन्द्र—आब अहाँ पूछू की सब पूछै चाहैत छी।

चिन्ता—अहाँ कतै रहै छी ?

नरेन्द्र—हम कौशिकी प्रान्त में रहै छी।

चिन्ता—एमहर कोना आबि गेलहुँ ?

नरेन्द्र—ई कथा बड़ पैघ अछि।

चिन्ता—हमरा सैह सुनबाक उत्कण्ठा अछि,।

नरेन्द्र तखन धैर्य पूर्वक अपने सुनू, हम ओकर मुख्य बात सुना दैत छी।

चिन्ता—हम पूर्ण धैर्य पूर्वक सुनैत छी अहाँ कहू।

नरेन्द्र—हमर पिता पच्छिम मे अध्यापन करैत छलाह, हमर जेठ भाए पटना मे पढ़ैत छलाह,

चिन्ता—अच्छा, घर गिरहस्ती ?

नरेन्द्र— हमर पित्ती घरक काज धन्धा करैत छलाह। हम नेनहि सँ देशोद्धारक काज मे एमहर ओमहर यत्र तत्र घुमैत छी।

चिन्तामणि बाबू क भहुँ कपार पर चढ़ि गेलन्हि, जाहि सँ कपार परक चारू रेखा स्पष्ट भै गेलन्हि, ओ कनेक गम्भीर मुद्रा मे पुनः श्वास खिचैत बजलाह—तखन ?

नरेन्द्र—तखन ? तखन आकस्मिक एक एहेन घटना घटल जाहि सँ हमर समस्त परिबार समुद्रक जहाज जकाँ चप्प दै डूबि गेल।

चिन्ता—अर्थात् ?

नरेन्द्र—अर्थात् समस्त परिबारक पालन पोषण कैनिहार, हमर पित्ती, कौशिकीक कृपा सँ किछु दिन सँ ज्वराक्रान्त छलाहे, बीच मे हमर पिता, हमर माए एवं हमर छोट भाइक संग हरि-द्वार यात्रा मे छलाह। दैव दुर्विपाकेँ टेन उनटि गेलैक, जाहि सँ ओ तीनू व्यक्ति अकाले मे काल कवलित भै गेलाह, हमर पित्ती सेहो ओही बीच मे परिवारक मोह माया छोड़ि अनन्त कालक हेतु विश्राम कैलन्हि ···

चिन्ता—अहा हा हा···

नरेन्द्र—ई समाचार जखन हमरा जेठ भाइक कान मे पड़लन्हि तँ ओ एकाएक बताह भै गेलाह, हम गाम ऐबाक उद्योग मे छलहुँ तावत समस्त देश मे अशान्ति पसरि गेलैक···

चिन्ता— अशान्ति पसरि गेलैक ?

नरेन्द्र—हँऽ नौ अगस्त के समस्त भारतबासी अपन अपन अधिकारक हेतु, बलिदान होमै लागल, हमरो पर सरकारी अभियोग लागि गेल, हम श्राद्ध करबाक हेतु गाम अबैत छलहुँ तावत पुलिस पकड़ि लेलक, हम अत्यन्त व्यग्र छलहुँ। अवसर पाबि पड़ा ऐलहुँ अछि,। परञ्च···

चिन्ता—परञ्च···?

नरेन्द्र—आब हमरा हृदय मे शान्ति कहाँ! हम पतित छी, चाण्डाल छी, आब हमर उद्धार··········"एतबा कहैत कहैत नरेन्द्रक नयन अश्रु पूर्ण भै उठल। चीत्कार कै उठलाह, हृदय मे सुप्त वेदना पुनः जागि गेलन्हि।

हमरा हृदय मे ज्वाला दै रहल अछि ज्वाला·····आ······ आ····एतबा कहैत नरेन्द्र मूर्च्छित भै खसि पड़लाह।

-(:卐:)-

—अमूल्य—

एक तँ नरेन्द्रक परिवारक अघटन घटना सुनला सँ चिन्तामणि बाबूक चित्त अत्यन्त व्यग्र भइए गेल छलन्हि, दोसर ई अचानक मूर्च्छा देखि व्याकुलता आरो बढ़ि गेलन्हि। एकसरे ओहि मन्दिर मे नरेन्द्र कँ छोड़ि बाहर जैताह तँ से नहि बनन्हि, नहिं जैताह तँ घोड़ा पर हुनका उठा कै कोना लै जैथिन्ह, एहि तारतम्य मे चिन्तामणि बाबू कँ किछु बिचार स्थिरे नहि

होइन्हि एक मात्र भगवती पर ध्यान लगौने किं कर्त्तव्य विमूढ़ भेल बैसल मूर्च्छा छोड़ैबाक प्रयास कै रहल छलाह किन्तु चित्तक चञ्चलता क्रमिक बढ़ले जाइन्हि।

ईश्वरक मायाक पार आइ धरि के पौलक अछि? हुनक महिमा अगम्य अछि, क्षण मात्र मे पर्वत-माला कँ विशाल चट्टान, विशाल चट्टान कँ दल दल भूमि बना देब ओहिना सुलभ हुनका हेतु अछि, जेना पुरान खऽढ़ मे दिआसलाइ सँ आगि पजारब।

चिन्तामणि बाबू चिन्ता मग्न छलाहे, तावत मे एक खड़-खड़िआ सवारी पहुँचा कै घूमल चल जाइत छल,। खड़खड़िआ देखैत देरी चिन्तामणि बाबू फक्क दै निसास छोड़लन्हि। कतेक नेहोरा कैला पर कहार सब नरेन्द्र कँ खड़खड़िआ पर लादि कै चिन्तामणि बाबू क गाम पर दै गेलन्हि।

चिन्तामणि बाबू सरकारी कचहरी मे नोकरी करैत छलाह। शनि दिन कचहरीक काज खतम कै गाम ऐल छलाह, रबि दिन मात्र गाम रहि पुनः प्रातः काल अपना काज पर जैब अनिबार्य छलन्हि, तैं हेतु एक सुयोग्य वैद्य कँ बजबा औषधिक प्रबन्ध कै, अपन स्त्री एवं एक मात्र कन्याकँ नरेन्द्रक सेवा बरदाइस क भार दै अपना काज पर चलगेलाह।

卐 卐 卐 卐

चिन्तामणि बाबूक कन्याक नाँव छलन्हि चण्डिका। चण्डि-का अपन पिता ओ भाइक आज्ञा सँ नरेन्द्रक सेवा परिचर्या मे अपन समय बितबै लगलीह। चण्डिका कँ सहोदरक मनोरथ भगवान् नहिएँ पुरौलथिन्ह, ओ अपना पिताक एक मात्र सन्तान

छलीह, तैं हेतु नरेन्द्र कँ देखि देखि चण्डिकाक हृदय मे एक प्रकारक शान्ति जेना भेटन्हि, जेना परमेश्वर कतहु सँ कोनो अमूल्य निधि आनि कै देने होथिन्ह । गौरवर्ण, विस्तृत ललाट, ओ आमक फाँक सन आँखि, बेंतक छड़ी सन लचलच देह देखि देखि चण्डिका आनन्दे नाचि उठथि ।

आइ शनि थिकै कचहरीक काज खतम कै चिन्तामणि बाबू गाम जैबाक हेतु तैआर छथि । नरेन्द्र क समाचार नहि बुझबाक कारणें, ओ आरो उताहुल बुझना जाइत छथि । थोड़ बहुत फल फलहरी कीनि कै सेहो नेने जाइत छथिन्ह, मनहि मन मनोरथ क पूत बन्हने जाइत छथि,—आइ हुनका पूर्ण स्वस्थ भेल दलान पर बैसल देखबन्हि, हुनक सब सविस्तर परिचय प्राप्त करब, हमरा अपन साध्य भरि जे हैत से बेचारे क सहायता करबन्हि, केहेन दीन अवस्था मे पहुँचि गेल अछि । हाय रे सहृदयक हृदय ! एहनो हृदय बला व्यक्तिक निर्माण ओही विधाता द्वारा होइत छन्हि जे दोसराक दुःख मे मक्खन जकाँ घमि जाइत अछि, आ' ओहनो मनुष्यक निर्माण ओही विधाता द्वारा होइछ जकर छाती रेलक पटरी सन कठोर, धन्य विधाता ! अहूँक मनोवृत्ति अपूर्व अछि ।

वेस डेगगर भेल चिन्तामणि बाबू कपार परक पसेना कँ तर्जनी आङुर कँ नकुसी सन बना' पोछि पोछि कै नीचा कऽ फेकैत चल जा' रहल छथि ।

बाटे में एकटा अपरिचित मनुष्य चिन्तामणि बाबू कँ टोकि

देलकन्हि—अपने गाम जा रहल छी ?

चिन्तामणि बाबू अन्यमनस्के भावेँ "हँ" कहि फेरो आगाँ बढ़ि गेलाह, किन्तु ओ अपरिचित व्यस्त सन मुद्रा बनबैत कहलकन्हि—अपने केँ एक बड़ आवश्यक खबरि देबाक अछि से जँ आज्ञा हो तँ कहि सुनाबी।

चिन्तामणि बाबू साकांक्ष होइत कहलथिन्ह—हमरा ?

अपरिचित—हँऽ अपने केँ।

चिन्तामणि०—अवश्य कहू।

अपरिचित—अपने केँ नीक होइत जे गाम नहि जा' पटना दिस जैतहुँ।

चिन्ता०—आश्चर्य सूचक मुद्रा बनबैत पुछलथिन्ह—हमरा ?

अपरि०—जी।

चिन्तामणि बाबूक मुँह पर मृदु हास्यक रेखा खिचा गेलन्हि मनहिं मन कहलन्हि—ई भ्रम सँ हमरा टोकि देलक'। पुनः ओकरा दिस तकैत कहलथिन्ह—हमरा अहाँ चिन्हैत छी ?

अपरि०—हँऽ पूर्ण रूपेँ चिन्हैत छी, चिन्तामणि बाबू अपनहिंक नाँव थिक ?

चिन्ता०—हँऽ।

अपरि०—जी ! अपने पटना शीघ्र जाउ।

आब चिन्तामणि बाबू सचिन्त भै गेलाह चित्त मे चञ्चलता आबि गेलन्हि पुछलथिन्ह—से किऐ' ?

अपरि०—अपने गत रवि दिन ककरो मन्दिर पर सँ उठा कै

अनने रहिऐ' ?

चिन्ता०—हँऽ से की ?

अपरि०—ओकरा अपने चिन्हैत छिऐ' ?

चिन्ता०—कोनो विशेष परिचय तँ नहि अछि।

अपरि०—ई अपने कँ पढ़ल अछि जे— "अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित् ।"

चिन्ता०—से किऐ' ? असल मे गप्प की छैक से तँ कहू।

अपरि०—ओ व्यक्ति अपनेक कन्या कँ मूर्च्छित कै राति मे चुप्पहि उठा कै पड़ा गेल, ओकर मुख्य अड्डा पटना मे छैक।

चिन्तामणि बाबूक आँखि चोन्हरा गेलन्हि कण्ठ रुद्ध भै गेलन्हि, संसार सँ घृणा होमै लगलन्हि, अपना कुकृत्य पर पश्चात्ताप होमै लगलन्हि, आ' संगहिं क्रोध, मुदा अपना परक क्रोधक प्रतिशोध लेबा मे मनुष्य ओहिना असफल रहैत अछि जेना पिछड़ि कै, वा गाछ सँ खसबाक काल अपना कँ सम्हारबा मे असफल रहैछ। मुँह सँ एतबा मात्र बहरैलन्हि "सरिपहुं ?"

अपरि०—हमरा अपने कँ कोन शत्रुता जे मिथ्या कथा आबि कै कहब।

चिन्ता०—ओकर पूरा पता अहाँ कँ अछि ?

अपरि०—ई कथा अपने कोना पुछैत छी ? एतबा तँ विचारल जाओ, जे व्यक्ति आइ सात दिन सँ अपनेक घर मे छल आ' अपने कँ ओकर ठेकाना पता नहि अछि, तखन हम तँ एक तेहल्ला थिकहुँ हमरा पता रहब कोना सम्भव थिक ?

चिन्ता०—अहाँ कँ ई कथा कोना पता लागल जे हमरा कन्या कैं लै कै पड़ा गेल ? अहाँ हमरा कोना चिन्हल जे यैह चिन्तामणि बाबू थिकाह ? अहाँ कँ एहि सँ कोन सम्बन्ध अछि ? अहाँ के थिकहुँ ? कतै रहैत छी ?

अपरि०—चिन्तामणि बाबू ! एखन हमर हुलिआ लेला सँ काज नहिं चलत, जकर हुलिआ लेबाक चाही तकरा प्रसंग तँ अहाँ हमरा पूछि रहलहुँ अछि, दोसर एतेक प्रश्नक उत्तर एक सङ्गे देब सर्वथा असम्भव अछि। यदि अपने कँ हमरा पर विश्वास हो तँ हमर कथनानुसार चलू। जैँ हेतु हम अपनेक हित लोक छी तैँ हेतु बार्ता देबै ऐलहुँ अछि। एतबा मात्र एखनो हम अपने कँ कहब जे एखन पटना गेला उत्तर अनायासे ओहि धूर्त्त कँ अपने पकड़ि सकै छी। विचार अपनेक थिक, जे इच्छा हो से करू, कहल छैक जे "सुहृद्वाक्यं न शृण्वन्ति गतायुषः" हम अपन कर्त्तव्य कैल, आब एहि सँ अगिला कर्त्तव्य अपनेक थिक। एखन अपने सावधान भेलहुँ तँ बेस नहि तँऽ······

चिन्ता—नहि तँ ?

अपरि०— चिन्तामणि बाबू ! ई कलियुग थिकै' कलियुगक जे धर्म छैक तकरे पालन कैला सन्ता लोक सुखी रहैत अछि, मिथ्या स्वर्गक कल्पना कै एहि युग मे लोक "पारलौकिक सुख तँ अदृश्य अछि तैँ नहिएँ पबैत अछि" ई कहब कोनो अनुचित नहि हैत, तखन रहलै सांसारिक सुख ताहू सँ वञ्चित भै जाइत अछि "योध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते, ध्रुवाणि तस्य

नश्यन्ति अध्रुवं नष्ट मेव हि" तखन एहि युगमे अपने सन स्वच्छ आत्माक व्यक्ति पद पद पर धोखा खाइत रहै तँ ई कोनो नवीन वा आश्चर्य बात नहि। एतेक शीघ्रता आजुक समय मे लोक कँ रसातल पहुँचैबा में पूर्ण अछि। ओकरा सन धूर्त ओ अत्याचारी बहुत कम्मे लोक एहि संसार मे भेटत। अपने सन स्वच्छ लोक कहाँ धरि एहेन धूर्त कें चीन्हि सकैछ। ओ कतहु अपनेक कन्या कें बेचि लेत, ओहि दू चारि सै सँ अपन वेगर्त्ता करत।

चिन्ता—बेचि लेत ? एहनो अन्याय ? एतेक अत्याचार ? उपकारक यैह प्रत्युपकार ? चिन्तामणि बाबू निसास लेथि आ' छोड़थि। हा नारायण ! आब हमर दशा ? एक मात्र कन्या तकर ई दुदशा, ? एहि दीनक हेतु एहने दुर्दिन ?

अपरि०—चिन्तामणि बाबू—'विपदि धैर्यम्" नीति ग्रन्थ मे एहिना लिखैत छथि, एखन अपने हा नारायण, हा नारायण, कै प्राणो यदि त्यागि देब तँ एहि सँ उद्धार नहि हैत, एकर उपाय शीघ्र करू।

चिन्ता—परञ्च............ .....।

अपरि०—परञ्च तरञ्च किछुने' हम अपने कँ विश्वास दैत छी जे एहि विपत्तिक समय मे हम अपनेक सक भरि सहायता करब। अपनेक आज्ञा हो तँ किछु बिचार दी ?

चिन्ता—हम तँ एखन बिचार शून्य भै गेल छी, एहि समय मे जँ विचार नहि देब तँ हमर उद्धारो हैब असम्भवे अछि।

अपरि०—अपनें कें गाम परक चिन्ता अछि ?

चिन्ता—हँऽ। हँऽ कहैत चिन्तामणि बाबू कें गाम परक करुण दृश्य आँखिक आगाँ नाँचि उठलन्हि—चण्डिका ! ओ अबोध कन्या ! जकरा जीवन भरि गार्हस्थ्य धर्मक अतिरिक्त संसारक कोनो विषय सँ परिचय नहि भेलैक आ' ओ अकस्मात् एक चाण्डालक निर्मम अत्याचार सँ बिलाड़िक मुँहमे पड़ल मुसरी जकाँ चुनचुना कै रहि गेल हैत। चण्डिकाक माए, जनिका पति शुश्रूषा, सन्तानक पालन छोड़ि कहिओ आइ धरि एहि विषमय वातावरण सँ भेट नहि, हुनक की दशा हेतैन्हि ? चिन्तामणि बाबू कें रहि रहि देह सिहरि जाइन्हि।

अपरिचित हुनक मुखमुद्रा, हुनक स्थिति देखि कथी लै कनेको बिचलित हैत, बेङक किचिऐनाइ आइ धरि कोन सापक हृदय कें घमा सकल अछि जे ओकर हृदय घमितैक ? हाय रे ईश्वर ! एहेन दयालुक द्वारा एहेन निर्मम प्राणीक रचनाक ईश्वरीय वैचित्र्य छोड़ि आरो की कहि सकैत छी। ओ अपरिचित अविचलित भावें बाजि उठल—अपनेक स्वरूप देखि हमरा हृदयमे दयाक सञ्चार भै गेल अछि, जावत धरि हम अपने कें एहि पाँक सँ उखाड़ि नहि लेब ता' धरि अपन आवश्यक सँ आवश्यको काज एको गोट नहि करब।

हाय रे सज्जनक हृदय ! जाहि मे आइ धरि कहियो प्रपंचक गन्ध नहि आबि सकलैक "ओ एहि मधु भरल वाणी मे, विष कुम्भम् पयो मुखम्" केर कहाँ धरि अनुमान लगा सकैछ। अपरि-

चितक वचन सँ मुग्ध भेल चिन्तामणि बाबू अपना हाथक औंठी अपरिचितक हाथ मे अपन चिह्न दै, गाम सँ निश्चिन्त भै सोझे वेदनाक भार नेने पटनाक बाट धैलन्हि।

अपरिचित हिनक औंठी पाबि प्रसन्नताक समुद्र मे डूब देबै लागल, मनहिमन बजैत ओहि ठाम सँ बिदा भेल—बैजू! आइ तोहर भाग्योदय भै गेलौक। अभिमानिनी! एतेक अभिमान? बिनु बैजू कैँ चिन्हने एतेक अपमान? चण्डिका! आइ तोरा एहि अपमानक बदला देबै पड़तौक, एहि औंठी सँ तोरा परिवार भरि कैँ मोह रूपी खाधिमे धकेलि, ओहि दुष्ट नरेन्द्र कें स्वाभिमानक दण्ड दै, बुझा दैत छिऔक, एहि अमूल्य अवसर पर चूकब सर्वथा मूर्खता थिक, एहि अमूल्य औंठी सँ आइ मनक मनोरथ बिनु सिद्ध कैने आब हमरा शान्ति कहाँ, विश्राम कहाँ।

चिन्तामणि बाबू पटना पहुँचि सोझे अपन एक पुरान मित्र धैर्यू बाबूक डेराक पुछारी करैत करैत कोनहुना हुनका डेरा धरि पहुँचलाह। धैर्यू बाबू अपन चिरसंगी चिन्तामणि बाबू कें देखि आह्लाद पूर्ण स्वागत कैलथिन्ह। धैर्यू बाबूक धिया पूता सब गोड़ लागि लागि एक कात कलमल कलमल करैत मधुरक लोभैँ ठाढ़ छल। चिन्तामणि बाबूक मुरछल मुखड़ा देखि धैर्यू बाबू कें सन्देह भेलन्हि। कुशल छेम भेला पर चिन्तामणि बाबू अपन सविस्तर वृत्तान्त धैर्यू बाबू कें सुना देलथिन्ह, समाचार सुनि धैर्यू बाबूक धैर्य जाइत रहल। आँखि डबडबा गेलैन्हि, आश्वासन दैत धैर्यू कहलथिन्ह—चिन्तामणि! तों हमर लङ्गोटिया दोस्त

थिकाह, तोहर ई परिस्थिति देखि हमरा हृदयमे की भै रहल अछि ई भगवाने जनैत छथि। कनेक काल गुम्म रह ओ साहस कँ समटि कै एक उसास लेलन्हि, तखन कहै लगलथिन्ह—सुनह; पटना मे एतेक दिन सँ रहैत पटना मे ऐल व्यक्ति कँ हाथ सँ कोना जाए दै सकैत छिऐक? एहेन अत्याचारी कँ पूर्ण दण्ड बिनु देऔने रही त हमर नाँव धैर्यू नहि, मुदा एखन तों स्नान भोजन तँ करह।

चिन्ता०—हमरा एखन अन्न घोंटल हैत? सब वस्तु विष जकाँ बूझि पड़ैत अछि। पहिने एकर उपाय तँ देखाबह।

धैर्यू—एकर बहुतो उपाय छैक, पहिने तँ ओकर हुलिआ कराबह, तखन जतेक अपन लोक छी पटना मे, सब क्यौ मीलि सौंसे पटना कँ छानि जेना तेना ओहि दुष्टकँ पकड़ि लेब, तेसर बात ई जे खुफिआ विभागक बहुतो इष्ट मित्र लोकनि छथि तनिका नीक जकाँ एहि हेतु दत्तचित्त होमै पड़तैन्हि, एखन ओ पटना ऐबे कैल हैत, ओकर छाती अनेरे धड़धड़ करैत हेतैक, एखन पकड़ब कोन कठिन अछि। मुदा आब गप्प सप्प मे समय जुनि लगाबह, ई अमूल्य समय अछि एकरा हाथ सँ नहि जाए दी। हँऽ एकटा बात तँ पुछबे नहि कैलिअहु, ओ कहाँक थिक, नाँव की थिकैक?

चिन्ता०—ताहि सभक कोनो पता नहि अछि।

धैर्यू बाबू व्यग्रभावेँ पुछलथिन्ह—ऐँ·····तकर कोनो पता नहि छहु, तखन अपना ओहि ठाम किऐ' रहै देलहक? कतै सँ ऐल छलहु?

चिन्ता०—मन्दिरक सविस्तर वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह—की कहिअहु धैर्यू ! ओकर दुर्दशा देखि ओकर शीलता, भद्रता, सुन्दरता, विद्वत्ता, नम्रता एवं दीनता चित्त केँ कोना आकृष्ट कै लेलक तकरा मन पाड़ला उत्तर एखनहुँ ई विश्वास नहि होइछ जे ओहि प्रतिभाशाली युवक सँ एहेन कुकृत्य कथमपि भै सकैछ। मुदा की कहिअहु..........

धैर्यू बाबूक मुखाकृति अत्यन्त गम्भीर भै गेलन्हि, कहै लगलथिन्ह—गरीबक सेवा सन दोसर धर्म एहि संसार मे नहि छैक एहेन अमूल्य बस्तु दोसर कोन ? जकरा बलँ महात्मा गान्धी मनुष्य सँ देवता भै गेलाह। तकर परिणाम एहेन विचित्र हो, ई तँ विधाताक साध्य सँ बाहर बुझना जाइछ मुदा ई कलियुग थिकैक। अस्तु—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते"

एहेन अमूल्य समय केँ हाथसँ नहि जाए दी, बुधि आरी एही मे।



—विपत्ति—

देवि दुर्गे! एहेन संकटमय समयमे हमर आश्रय के? आब एहि दीनक उद्धार कोना? कहैत कहैत नरेन्द्रक नेत्रपुट फूजल। अपना सम्मुख चण्डिका कें देखि चकित भै गेलाह; ऐं...हम कहाँ छी? देवि! अहाँ के थिकहुँ? मा दुर्गे! एहि दीनक उद्धार करू, कहैत नरेन्द्र कोच पर सँ उठि धड़ाक दै चण्डिकाक पैर पर खसि पड़लाह। पुनः संज्ञाहीन भै गेलाह। आइ सात दिन पर नरेन्द्रक मुँह सँ शब्द बहरैल छल, जे सुनि चण्डिकाक हृदय आनन्देँ तरङ्गित होमै लगलन्हि; आँखि डबडबा गेलन्हि, मनहि मन कहै लगलीह—वाह रे भक्त! अचेष्टावस्थो मे एहेन तल्लीनता, मा कालिके! आब अहाँ कें अनठौने नहि बनत। ई कहैत नरेन्द्र कें पुनः पानिक पट्टी दै पंखा हुँकै लगलथिन्ह।

खट्...खट्...खट्...खट्, बाहर सँ केओ केबाड़ खटखटा रहल छल। चण्डिका उठि केबाड़ फोललन्हि, केबाड़ फोलैत देरी सम्मुख ठाढ़ व्यक्ति कें देखि, ओकर विकृत एवं वीभत्स मुखमुद्रा सँ चण्डिकाक शरीर मे कम्पन होमै लगलन्हि घाम सँ सौंसे देह भीजि गेलन्हि, किछु अतीत घटना सिनेमाक फोटो जकाँ आँखिक आगाँ नाचि उठलन्हि, मुँह सँ अकस्मात् चीत्कार बहार भै गेलन्हि।

नरेन्द्र "पानि लेब पानि लेब" कहि हल्ला मचबै लगलाह। तावत पनिभरनी पानि भरबाक हेतु आङन सँ चल अबैत छलि,

दरबज्जा पर एक व्यक्ति कें ठाढ़ देखि ओ घोघ काढ़ि, पैर मारने आङन दिस बढ़लि। ओ दरबज्जा पर बैसल व्यक्ति खबासनी कें आङन जाइत देखि कहलकै—खबासनी! एक टा चिट्ठी अछि से नेने जाउ।

खबासनी—ककर चिट्ठी छिऐन्हि, के देलखिन्हँ ?

बैजू—चिन्तामणि बाबू।

खबासनी—ककरा ?

बैजू—चण्डिका दाइक माए कें।

खबासनी—ओ एखन गोसाउनिक पूजा करैत हेथिन्ह।

बैजू—अहाँ चिट्ठी नेने जैऔन्हि।

खबासनी चिट्ठी लै आङन आइलि। चण्डिकाक माए गोसाउनिक पूजा कै, फुलडाली, अछिन्नजलक लोटा लै, तुलसी चौरा लग आइलि छलीह। खबासनी चिट्ठी देलकन्हि तँ पुछलथिन्ह दरबज्जा पर के अछि ?

खवासनी—हम नहि चिन्है' छिऐन्हि।

चण्डिकाक माए जाहि घर मे नरेन्द्र छलाह ओतै ऐलीह। चण्डिकाक हाथ कै चिट्ठी दै कहलथिन्ह—चण्डी पढ़ह तँ ई ककर चिट्ठी थिकैन्हि। चण्डी चिट्ठी फोलि पढ़ै लगलीह—

चि० चण्डी !

आशीर्वाद।

आगाँ समाचार जे हमरा औफिस सँ किछु कागत पत्र चोरि भै गेलैक अछि तैं हेतु मजिस्टर साहेब अपना घरक तलासी

लेताह, एहि मे इज्जति आवश्यक प्रश्न अछि तैं हेतु अहाँ अपना माए कैं नैहर बिदा कै देबन्हि आ' अपने एहि पत्रवाहकक संग हिनके ओहि ठाम चल जैब। घर मे जे रोगी छथि से पतित छथि हुनका बिदा कै देबन्हि। विशेष कुशल। इति शुभम्

चिन्तामणि

नरेन्द्र चिट्ठी सुनैत कोच पर सँ फानि उठलाह—हम पतित छी, हम चाण्डाल छी, हमर आब उद्धार कोना ? मा दुर्गे ! ई कहैत कहैत कोच पर सँ कुदि बाहर दिस पड़ैलाह। चण्डी चिट्ठी पढ़ैत पढ़ैत मूर्च्छिता भै 'खसि पड़लीह, चण्डीक माए हाक पाड़ि कानै लगलीह–हम कोन गाइक घर मे आगि लगौने छी जे ईश्वर अबरा पर जबरा लगौने जाइत छथि, आब हम की करू ?

खबासनी अबाक भेलि ठाढ़ि रहै, ओ बोल भरोस देबै लगलन्हि, लोटा मे सँ पानि लै चण्डीक माथ पर ठोकलकन्हि, किछु कालक बाद हुनका होस भेलन्हि। चण्डिकाक माए कैं आब नरेन्द्रक चिन्ता भेलन्हि फेर दैव कैं उलहन देबै लगलथिन्ह— हाय दैव ! हम अहाँक कोन अपराध कैने छलहुँ जे एहि गरीबनी पर एना भै खिसिआ' गेलहुँ अछि ?

तावत बाहर सँ बैजू सोर कै कहलकन्हि—एखन एहि सभक समय नहिं अछि झट दै चलबाक ओरिओन करू। बैजूक शब्द सुनि चण्डिका कैं जेना तीर मारि देने होइन्हि, चण्डीक माए खबासनी कैं कहलथिन्ह—गै तेतरी ! कने' वण्टू बच्चा कैं बजा लबहुन्ह तँ, तावत चण्डिका फेर मूर्च्छिता भै गेलीह।

सूर्य अस्त हैबा पर छलाह, तेतरी बङ्टू बाबू कँ बजबै बिदा भेलि तँ दरबज्जा पर देखैत अछि ओहार लागल महफा कहार नेने ठाढ़ अछि। तेतरी कँ डाँटि कै बैजू कहलकै' ऐ खबासनी! कहिऔन्हि ने भट दै तैआर हेतीह। बैजूक कर्कश स्वर कान मे पड़ैत खबासनी कँ बूभि पड़लैक जे पीठ पर क्यो एक मुक्का धमका देलक, ओ चौंकि उठलि, ओकरा पैर मे जेना जाँत बन्हा गेल होइक, कथी लै ओ बङ्टू बच्चाक ओहि ठाम जैबाक हेतु पैर आगाँ बढ़ौत, चट्टहि आङन दिस घुरि गेलि; आ' चण्डीक माए कँ जा कै कहलकन्हि—मलिकाइनि! दूरा पर कहार महफा आबि गेलैक। चण्डीक माए आब आरा अवग्रह मे पड़ि गेलीह, हुनक बुद्धि जेना हेड़ा' गेल होइन्हि तहिना अस्त व्यस्त भै गेलीह। एक दिस चण्डी मूर्च्छिता भेलि पड़लि, दोसर दिस नरेन्द्रक पड़ैनाइ, तेसर दिस ई जैबाक हूलि, हुनका बताहि बना देलकन्हि लगलीह बाजै—एहना हालति मे हम कतहु नहिं जा' सकैत छी, एक मात्र सन्तान एखन कालक मुँह मे पड़लि अछि, ओ एक टा कतै सँ आबि विपत्ति मे धकेलि कतै पड़ा कै चल गेल, तखन हम नैहर जाउ, ई हमरा बुतेँ नहि हैत, केदन कहलकै ककर दर्शन परि, एक दिस गुरू गोसाइ एक दिस कुर्थी बाओग, आब जे हैबाक हेतैक से एही घर मे हैत, लाज धर्म बाँचै कि चल जाए मुदा आब एहि घर कँ हम एखन छोड़ि नहि सकैत छी।

दलान पर बैसल बैजू सब गप्प सुनैत रहै। ओकरा मन मे



एकरे चिन्ता रहैक जे कदाच ई नैहर नहि बिदा भेलि तखन हम की करब। मुदा नरपिशाचक हृदय जौं घबड़ाए तँ वज्रक गर्जन सँ आकाश किऐक नहि फाटे ? ओ दृढ़ भै दलान पर सँ जोर जोर सँ कहै लगलन्हि--एहि सभक चिन्ता हमरा अछि, हम एतबे' काज करै ऐल छी व्यर्थ जे कहार सब कँ अबेरि करबैक ताहि सँ कोन फल ? लोको कँ लोक कहैत छैक जे "कोनो बेरि विपत्ति" से एखन अहाँ कँ बेरि विपत्ति पड़ल अछि। चिन्तामणि बाबू सन नीक लोक तनिका घरक कतहु तलासी हो, मुदा भगवानक लीला के जनैत अछि। तखन अहाँ जौं नहि जाइत छी तँ वेचारे कँ पागे टा खसतन्हि, जन्म भरिक अरजल यश प्रतिष्ठा पानि मे चल जैतन्हि। एहि ठामक चिन्ता छोड़ू, एहि ठामक सब प्रबन्ध हम कै लैत छी, अहाँ सोझे उठि कै महफा पर चढ़ू।

एहन संकट काल मे तँ केहेन केहेन बुद्धिमान भुतिआ जाइत छथि, तखन एकटा सभ्रान्त घर मे पालिलि स्त्री संसारक छल छद्म सँ हजारो कोस दूर रहि जीवन बितौनिहारि, कहाँ धरि विवेक सँ काज लै सकैत अछि ?

अगत्या चण्डिकाक माए कँ नैहर उठि बिदा होमै पड़लन्हि। कपटीक अत्याचार सँ हुनक सुदिन दुर्दिन मे परिणत भै गेलन्हि। विपत्तिक संगिनी एक मात्र सन्तान चण्डिका कँ विपत्ति सागर मे छोड़ि, चण्डिकाक माए नैहरक रस्ता धैलन्हि।



—शारदा पूजा—

शहर भरि बड़े धूमधाम बुझना जाइछ, चुट्टीधारी जकाँ लोक सब एक बाट धैने चल जा' रहल अछि। देहाती जनता बजारक उच्च अट्टालिकाक पंक्ति बिजलीक खम्भा मे बिनु तेल बातीक जरैत दीप देखि, तर्क वितर्क करैत, क्षुब्ध भेल, संसारक प्रगति पर आश्चर्य प्रगट करैत, अङरेज बहादुरक बुद्धिमानीक प्रशंसा करैत आगाँ मुहँ बढ़ल जा' रहल अछि। भगवतीक खरखाह लोकनि पञ्चपात्रक पेन सँ कपार पर सिनुरक ठोप कैने जेना अकाल भेला उत्तर आकाश मे धूमकेतुक उदय होइत अछि, तहिना विस्तृत ललाट पर कोनो भावी उपद्रवक सूचना जेना दै रहल हो तहिना बुझना जाइत अछि। सभक काँखतर कम्मलक टुकरी मे दुर्गा सप्तशती लेपटौल "या देवी सर्व भूतेषु क्षुधा रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः" जेना साकार रूप धारण कै हुनका लोकनिक संग चल जा रहल होथि। नचनिञा बजनिञा अपन साज बाज टङने दुर्गाघर दिस शीघ्रता सँ बढ़ल जा रहल अछि। झुण्डक झुण्ड स्त्रीगण रंग विरंगक गहना गुरिआ, लत्ता कपड़ा, साज श्रृंगार कैने पुरुष समाजक स्वतन्त्रताक आलोचना प्रत्यालोचना, अपना सभक सामाजिक बन्धनक कटु आलोचना करैत सड़कक कातेकात आगाँ ससरलि जा रहलि अछि।

ओही झुण्डक पाछाँ पाछाँ एक छोट छीन जमीदारक घर मे जन्म नेने, अपना पिताक एकमात्र सन्तान जकरा माए दुद्धा दाँत

हैबा सँ पूर्वहि जीवन भरिक हेतु त्यागि ताहि ठाम चलि गेलि छैक जतै सँ ताकि आनब, बौंसि आनब मनुष्यक साध्य सँ बाहरक विषय अछि, दुलार एवं शिक्षाक बीच पालति, बारह तेरहक अवस्था रहितो जकरा हृदय पर सांसारिक वातावरणक क्षीण रेखा अंकित भै गेल छैक, परम सुशीला, कर्त्तव्य निष्ठताक मधुर प्रकाशक अरुणिमा जकरा अन्तःकरण कें ज्योतिर्मुख कै देने छैक, जे आधुनिक युगक प्रगतिवादिताक स्थूल परिचय प्राप्त कै नेने छलि, अपन पिता पं० गौरीशंरक आज्ञा सँ महाष्टमीक राति सन महान पर्व बूझि दुर्गा स्थान दर्शनक हेतु एकसरिए चलि जा' रहलि अछि।

"मा दुर्गे ! आब हमर उद्धार ? शारदे ! पतितक पतवार अहाँक हाथ अछि। चाही तँ उबारी, चाही तँ डुबाबी।"

"शारदे" ई शब्द सुनैत देरी जेना शारदाक कोंढ़ मे धकूदै लगलैक। ई के थिक ? हमर नाम किऐक लेलक ? हमरा कोना चिन्हैत अछि ? एहि तरहँ तारतम्य करैत थकमका कै ठाढ़ि भै गेलि।

"शारदे ! पंक मे फँसल एहि पतितक उद्धार करू" क्रमिक शब्द समीप होइत गेल। शारदाक धकधकी आरो तीव्र होइत गेलैक, किछु काल साहस पूर्वक शारदा ठाढ़ि रहलि, किन्तु नारी हृदय, साहस कतेक काल राखि सकैछ ? आकस्मिक विपत्ति आबि मनुष्यक जे दुर्दशा करैत छैक, तकर स्मरण करैत शारदाक शरीर घाम सँ तरबतर भै गेलैक, तावत ओ ध्वनि अत्यन्त समीप आबि गेल।

"ठाढ़े लग्गा वैसने कोस, पड़ि रही तँ दिनक कोन दोष" बात तँ ठीके, एही थोड़बे कालक तारतम्य मे शारदाक, आगाँ आगाँ जाइत झुण्ड बहुत दूर आगू बढ़िगेल छल। "शारदे! आब हमर उद्धार" ई कहैत नरेन्द्र शारदाक लग दै आगू बढ़ि गेलाह। शारदाक हृदय नरेन्द्रक करुणा-पूर्ण ध्वनि सँ द्रवित भै गेलैक, ओ साहस बान्हि पूछि बैसलन्हि—अहाँ के थिकहुँ ?

विपत्तिक बिहाड़ि मे उधिआइत हृदय कैँ, छोट छीन ढेपो भेटला उत्तर जेना उधिआइत पात कैँ किछु क्षणक हेतु सान्त्वना भेटि जाइत छैक तहिना सहानुभूति पूर्ण वचन सुनि किछु आशा भेटि जाइत छैक। "अहाँ के थिकहुँ" ई प्रश्न नरेन्द्र क गति कैँ रोकि लेलक, किन्तु एक बालिका दिस ध्यान जाइत देरी आशा पुनः निराशाक रूप मे परिणत भै गेल। उत्तर देबाक इच्छा यद्यपि नहिं छलन्हि तथापि मुँह सँ बहार भै गेलन्हि—हम थिकहुँ नराधम।

शारदा—अहाँक नाँव की थिक ?

नरेन्द्र—पतित।

शारदा—कतै घर अछि ?

नरेन्द्र –पाप कुण्ड मे।

शारदा मनोभिलषित उत्तर नहिं पाबि, कनेक हताश भै गेलीह किन्तु हृदय मे विचारधारा प्रवाहित भै गेलन्हि—"ई प्रायः बताह अछि ? किन्तु बताहक उत्तर एहेन मर्ममय नहि भै सकैछ। तखन प्रायः एहि व्यक्तिक जीवन मे कोनो एहेन पैघ विपत्ति आबि

जीवनक बाट घेड़ि नेने छैक जाहि सँ एकर बुद्धि विचलित भै गेल छैक। जे होइक एकर वृत्तान्त सुनबाक चाही। किन्तु एहि एकान्त स्थान मे एक अपरिचित पुरुषक संग सम्भाषण की समाजक आँखि मे दोष पूर्ण नहिं थिक ?

अवश्य।

तखन ?

तखन एकरा विपत्तिक कोन विषाद, कोन हर्ष भै सकैत छैक ? तैँ कीसमाजक डरँ एक विपत्ति ग्रस्त प्राणीक उद्धार करब ईश्वरक ओहि ठाम दोषभागी बनब थिक ? कथमपि नहिं। समाजेक डर रखैत रखैत आइ समस्त समाजमे अज्ञानताक महारोग—संक्रामक रोग—पसरि गेल अछि। जाहि समाज कँ जगज्जननी जानकीक प्रति विश्वास नहिं भेलैक ताहि समाजक डर करब मूर्खता थिक।

यद्यपि स्थान स्थानपर समाजक उपेक्षा सर्वथा अनुचित थिक, किन्तु एहेन पुण्यकर्म मे एकमात्र समाजक डरँ कर्तव्यच्युत भै जैब सेहो अनुचिते। एहि सँ हमरा पर दोषारोपण हो अथवा हमर यशोगान,किन्तु एहि असहाय व्यक्तिक विपत्तिक कारण अवश्य बूझब।" एहि निष्कर्ष पर पहुँचि शारदा अत्यन्त विनम्र स्वर मे प्रश्न कैलथिन्ह—अहाँक एहि उत्तर सँ हमरा सन्तोष नहिं भेल अछि तैँ हेतु हम यथार्थतः अहाँक परिचय प्राप्त करै चाहैत छी।

नरेन्द्र—सुनू–हम पतित छी, हम चाण्डाल छी, हमर परिचय प्राप्त कै अहाँ की करब ?

शारदा—"की करब" एहि प्रश्नक उत्तर हम तखनहिं दै सकैत

छी जखन अहाँक परिस्थितिक किछुओ ज्ञान हो।

नरेन्द्र— हमरा परिस्थितिक ज्ञान भेलो उत्तर अहाँ ओहि जाति मे जन्म नेने छी जाहि जाति कँ एखन धरि पिजड़ाक सुगा सँ अधिक अधिकार नहिं भेटलैक अछि तखन अहाँ की कै सकैत छी ?

शारदा— आब बुच्ची दाइक युग समाप्त भेलैक आब सरोजनी नायडू आ' पण्डित विजया लक्ष्मी सन कर्म निष्ठ महिलाक युग अहाँक सम्मुख उपस्थित अछि तखन अहाँक एहि कथाक संगति हमरा जनैत कतहु नहिं भै सकैछ।

नरेन्द्र—तथापि मैथिल समाज मे ओ प्रगतिवादिता एखन स्वप्ने बुझना जाइछ।

शारदा—ई अहाँक बुद्धिक दुर्बलता थिक। आब किन्तु तिन्तु किछु नहिं, हम निर्भय भै अहाँक सहायता करब ई हमर प्रतिज्ञा वाक्य बुझू, मुदा अहाँक परिस्थितिक ज्ञान पहिने आवश्यक अछि।

नरेन्द्र—आइ अहाँ सँ भेट भेला पर बुझना जाइत अछि जे हमर स्वप्न साकार भै गेल अछि। अस्तु ! जखन अहाँ एहेन दृढ़ प्रतिज्ञ छी त सुनू—हमर नाँव थिक नरेन्द्र, हम परम संकट मार्ग मे पड़ि गेल छी। एवं प्रकारेँ अपना विपत्तिक सविस्तार वृत्तान्त सुना देलथिन्ह।

शारदा नरेन्द्रक सब वृत्तान्त सुनि दीर्घ निश्वास लेलक, तकर बाद नरेन्द्र सँ कहलकन्हि—अहाँ हमरा ओहि ठाम चलू, हमर

पिता पण्डित छथि, धर्म शास्त्रक अनुसारेँ जेना उद्धार हैत तेना तकर प्रबन्ध हम कै देब।

नरेन्द्र—हमअहाँक ओहि ठाम चलू ?

शारदा—हँऽ हँऽ।

नरेन्द्र—ई कोना भै सकैत अछि। हम पतित छी, संसार हमरा पतित कहैत अछि, हम चाण्डाल छी, हम अस्पृश्य छी, हमरा सँ संसार घृणा करैत अछि। तखन अहाँक पिता पण्डित छथि, ओ हमरा देखितहिं विकल भै जैताह, हुनक सनातन रूढ़िवाद मे धक्का लगतन्हि, ओ हमर उद्धार कोना कै सकैत छथि ?

शारदा—अहाँ पतित कोना छी ?

नरेन्द्र—हम अपना पिताक श्राद्ध पर्यन्त नहिं कैल।

शारदा—अहाँ चाण्डाल कोना छी ?

नरेन्द्र—देशक पाछाँ जीवन कैँ बेचि देल, किन्तु परिवारक पालन हमरा सँ नहिं भेल।

शारदा—अहाँ अस्पृश्य कोना छी ?

नरेन्द्र—हम जहल मे सब वर्णक संग बैसि कै खैने छी।

शारदा—एहि सभक उत्तर हमरा लग अछि, अहाँ आज्ञा दी तँ हम एक एक टाक उत्तर कहि सुनाबी।

नरेन्द्र—आ उत्तर अहाँक कल्पना मात्र बूझल जैत।

शारदा—कोना कै ?

नरेन्द्र—जेना कल्पनाक सूत्र पर स्वर्ग आ' नरकक निर्माण एहि भू मण्डल सँ बहुत दूर भेल अछि।

शारदा - नहिं, नहिं, आबक युग प्रगतिवादिताक स्तम्भ पर रंग बिरंगक चालि धैने जाइत अछि। जे बूढ़ पुरान कें एखनहुँ चिड़ैता सन तीत लगै छन्हि, मुदा आब गिद्धक सरापें गाए नहिं मरैत छैक। आब पाथरक भगवान आ' आकाशक स्वर्ग हमरे पर खेपने जाइत छथि। शास्त्रक मूलतत्व रूढ़िवादिताक गोबर तर झँपा गेल अछि। मनिआर सापक मणि प्राप्त करबाक हेतु लोक मे एक टा कथा छैक जे मणि अननिहार व्यक्ति सावधानता पूर्वक एक पथिआ गोबर ओहि मणि पर धै दैत छैक, तखन ओकर प्रकाश झँपा गेला सँ ओ साप अन्हारे मे छटपटा कै मरि जाइत अछि, तहिना ओहि गोबर तर मूल तत्व कें पड़ि गेला सँ शास्त्र छटपटा कै मरि रहल छल, मुदा विज्ञान आँखि फोलि देलकैक। महात्मा गान्धी सन महापुरुषक अवतार भेला सँ कल्पनाक सूत्र टूटि गेलैक, आब वास्तविकता दिस लोक झुकि रहल अछि।

नरेन्द्र— ई विचारक वस्तु थिक, किन्तु व्यवहारक नहिं, समाज पछुऐल अछि, लोक मर्यादा, ओ शास्त्र मे कथित धर्माधर्मक डर हमरा राखहि पड़त।

शारदा— एकर अर्थ ई नहिं जे लोक मर्यादा धर्माधर्म सँ फराक रही, ताहि हेतु हमर किछु कर्त्तव्य अवश्य हो, मुदा "प्रतिष्ठें नाङड़ि कटावी आ छौ मास घावँ मरी" ई हो उचित नहिं।

नरेन्द्र—तथापि········

बिचहि मे शारदा बाजि उठलि—तकर चिन्ता हमरा अछि।



एतबा कहि दूनू गोटे गाम पर घुरबाक उपक्रम कैलन्हि, मुदा विचार मे एहि हेतु परिवर्त्तन भेलन्हि जे आइ महाष्टमीक राति थिकैक तैँ भगवतीक दर्शन करैत घुरि जाइ ।

दुर्गाक मन्दिर पर लोकक अपार हूलि, मूड़ पर मूड़ खसैत, ताहि बीच मे एक नटुआ नचैत अपन भाव भंगिमा सँ, घरक फाजिल लोकनि सँ दुअन्नी, चौअन्नी, अठन्नी असुलि रहल छल। शारदाक संग नरेन्द्र दुर्गा मन्दिर पहुँचलाह; दुआरि पर लोकक हूलि मे मुड़िआरी दै देखै लगलथिन्ह जे एहि बीच मे की होइत छैक। कहबी छैक–"अपने जैब नेपाल, तँ कपार जैत सङ्गहि" ओहि बीच मे सँ एकव्यक्ति बहरा' नरेन्द्रक पहुँचा पकड़ि लेल-कन्हि, नरेन्द्र अकचकाइत ओकर मुँह ताकै लगलथिन्ह तँ ओ अपना जेबी सँ हुनक फोटो बहार करैत कहलकन्हि–यह आपका ही है ? नरेन्द्र क्षुब्ध भेल बकर बकर मुँह तकिते रहलथिन्ह। ओ पुछलकन्हि—"नरेन्द्र आपका ही नाम है ? चलिये सर-कार आपकी इन्तजारी में है," एतबा कहैत दन दन कै दू टा सिपाही आबि गेल आ' हिनका हथकड़ी लगा' बिदा भै गेल।

शारदा ओतैक समाचार देखि बिखिन्न भेलि ठाढ़ि छलि, जखन नरेन्द्र कैँ ओहि ठाम सँ लै बिदा भै गेलन्हि तखन शारदाक आँखि नोर सँ दहा गेलन्हि, मनहिं मन गुनि धुनि करैत बहुत काल धरि ठाढ़िए छलीह, अन्त मे भगवतीक आगू मे बैसि भरि इच्छा कनलीह। तखन भगवती सँ कहै लगलथिन्ह—मा दुर्गे! अहाँ कैँ अपन प्रतिज्ञा वाक्य बिसरि गेल–

"इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति
तदा तदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम्"

आब अहूँ ओहि महिला समाज मे मिलि गेलहुँ जे अपन स्वरूप, अपन सम्मान, धैर्य ओ साहस कँ बिसरि सिंहिनी सँ बिलाड़ि भै गेलि अछि। आब अहूँ अपना कँ नहिं चिन्हैत छी? एक देश भक्तक ई दुर्दशा देखि अहाँक छाती किऐक नहिं फाटि जाइत अछि? की रक्तवीजो सँ अधिक भयंकर एहि दानवक बीज बूझि पड़ैत अछि? महिषासुरो सँ अधिक महाबली ई बुझना जाइछ? शुम्भ, निशुम्भक छाती विदीर्ण कैनिहारि अहाँ चुप किऐक छी? बाजू, की एहि बालिकाक करुण क्रन्दन अहाँक कान धरि नहि पहुंचैछ? ई कोटि कोटि गरीबक दुःखक ज्वाला अहाँक हृदय कँ द्रवित नहिं कै सकैछ? मा शारदे! हमर शारदा पूजोत्सव एही चिन्ताक आगि मे झरकि जैत? की हमर प्रतिज्ञाक पूर्त्ति नहिं हैत?

एतबा कहैत कहैत शारदाक मुँह लाल भै गेलन्हि, हुनका मुँह पर करुणा एवं क्रोधक क्षीण रेखा अंकित भै गेल। दर्शकक मेला लागि गेल। क्यौ कहैक "बूझि पड़ैत अछि बताहि छैक" तँ क्यौ कहैक 'कपार पर कोनो विपत्ति छैक" एवं प्रकारें लोक तर्क वितर्क करैत छल। शारदा ओहि ठाम सँ उठि बिदा भेलीह। अपना गाम पर आबि अपना पिताकँ ओहि दुखीक सविस्तर वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह।

महात्मा पण्डितराज 'नरेन्द्र' नाम सुनि चौंकि उठलाह।

मनहिं मन कहै लगलाह—हा ईश्वर ! हमर सब आशा पर पानि फिरि गेल। हमरा दोसर के अछि ? एक मात्र कन्या तकरा सुख मे बाधा, अवश्य ओहि बाधा सँ लड़ब आ' लड़िकै ओकरा परास्त करब, अथवा तन, 'मन, धन स लै अपन प्राण पर्यन्त एहि हेतु उत्सर्ग कै देब। अस्तु पुनः शारदा सँ कहलथिन्ह—शारदा ! तों निश्चिन्त रहह, हम ओहि दीनक उद्धार अवश्य करब।

एमहर चण्डिकाक माए कँ नैहर बिदाकै बैजू पहुँचल चण्डिकाक समीप। मूर्च्छिते अवस्था मे हुनका उठा ओहि ठाम सँ बिदा भेल,। बहुत दूर गेला उत्तर क्रमहिं रातिक ठंढा बसात लगला सँ चण्डिकाकँ चैतन्य भेलन्हि, बूझि पड़लन्हि जे क्यौ उठाकै नेने जा रहल अछि, अतीत घटनाक स्मरण भेला सँ समस्त शरीर मे रोमाञ्च भै गेलन्हि, नाक पर घाम आबि गेलन्हि, हृदय मे कम्पन एवं ओकरा गति मे तीव्रता। भावी आशंकाक डर तँ अवश्य भेलन्हि, किन्तु साहस कँ नहिं बिसरि सकलीह, किछु काल मनहिं मन सोचलन्हि "आब की करबाक चाही ? एहि चाण्डाल सँ कोना मुक्ति पाबि सकैत छी"? अन्त मे एहि निर्णय पर पहुँचलीह जे एहि नरपिशाचक कर सँ आब हमर मुक्ति कहाँ। तखन ? जावत साँस तावत आस" बला लोकोक्ति मन पड़लन्हि, सहसा ओकरा कोरा सँ झटका मारि कूदि गेलीह आ' ओहि अन्धकार पूर्ण पथ पर पड़लीह।

तिमिराच्छन्न आकाश, अन्धकारक वर्णन मनवोधक एहि पंक्तिद्वारा करी जे "सुइ लै बेधिअ गाँथिअ ताग, हाथ छुबिअ

तँ हाथहि लाग" तँ कोनोअत्युक्ति नहि, राति एतबा भीजि चुकल छल जे निद्रा देवीक कृपा सभक आँखि पर पूर्ण भै गेल छल। चण्डिका ओहि अन्धकार मे विलीन भै गेलीह। बैजू हुनक पद-ध्वनिकेँ अकानैत बहुतो दूर धरि दौड़ैत चल गेल, अन्त मे पद-ध्वनिओं ओकरा नहिं सुनना गेलैक, तथापि ओ खेहारने आगाँ बढ़ैत चल गेल पुनः किछुए क्षणमे ओ निस्तब्धता व्याप्त भै गेल जे बैजूक ऐबा सँ पूर्व छल।

× × ×

अरे तोरी भलाके हौ घोड़ा केँ हँकने चलह। आइ महाष्टमीक राति थिकैक कतहु दुर्गाक दर्शन नहिं भेल, की सोचने छलहुँ की भै गेल। ओत्तहि ने कहितह जे हमर घोड़ा आइए पड़ोरक पथ्य खैलक अछि ई टके कोस डेग दैत छह आ' अपने तोँ औंघाइत छह तखन तँ फाँसी पर पड़लहुँ हम ? ई कथा टमटम बला केँ झमाइत, कहैत उमेश बाबू अपन परिवार सहित चल जा रहल छलाह। टमटम बला धोकड़ी सँ एक टा बीड़ी बहार कै ओहि मे सलाइ खड़रि कै लगबैत कहलकन्हि बाबू देहाती सड़क पर ततेक गर्दा रहैत छैक जे पहिआ हथहथ भरि चपि जाइत छैक दोसर लाद छैक जान सँ ऊपर तखन हमरा की कहैत छी।

उमेश बाबू नाक झाड़ैत कहलथिन्ह—कहबह की कपार, कतहु रहबोक स्थान तँ ताकह, आ जेबी सँ घड़ी बहार कै देखैत पुनः कहलथिन्ह—देखह आब बारह बजवा मे बीस पचीसे मिनट बाँकी छह।

टमटम बला चाबुक घोड़ाक पीठ पर लगबैत कहलकन्हि आब दुर्गा-स्थान थोड़बे दूर अछि बारह बजे पहुँचि जैब। एतबा गप सप करिते छलाह तावत ककरो कुहरबाक शब्द कान मे पड़लन्हि। उमेश बाबू जेमहर सँ कुहरबाक शब्द अबैत छलैक तेमहर टौंर्च (Torch) बारि कै देखलथिन्ह, ताहि मे हुनका जे दृश्य देखना गेलन्हि तकरा देखिते मन घबड़ा गेलन्हि। लगले टमटम कैँ रोकबा' अपने फानि कै उतरि गेलाह आ' ओहि ठाम पहुँचलाह, एक पूर्णयौवना खत्ता मे अचैतन्यावस्था मे पड़लि छलि, ओकरा नाक सँ शोणितक फाँफ बहल छलैक जे खत्ता मे जनमि गेल छलैक, एक व्यक्ति कैँ आरो सोर करैत उमेश बाबू समटि कै ओकरा उठा कै लै जा' कै टमटम पर बैसा लेलथिन्ह। टमटम पुनः आगाँ बढ़ल। उमेश बाबूक मुँह पर चिन्ताक रेखा अंकित भै गेलन्हि, मनहि मन डर सेहो होइन्हि, सहसा दुर्गाक स्मरण करैत हुनका मुँह सँ बहरैलन्हि, बर्ष बर्षक फल थिक, एहि बेरुक दुर्गा पूजोत्सव हमरा लोकनिक यैह ?



—आश्चर्य—

डेढ़ मास आइ गाम छोड़ना भेल ने आइ धरि चिट्ठीक उत्तर ऐल अछि, ने गामक कोनो समाचार बुझैत छी। धैर्यू! एखन धरि खोफिआ (C. I. D.) कँ कोनो पता नहिं लगलैक अछि? आब पटना मे एको रत्ती मन नहिं लगैत अछि, नोकरिआ आदमी कहाँ धरि एतेक निश्चिन्त रहि सकैत अछि? गामे जा' कै की करब? ओ घर, ओ आङन तँ बूझि पड़त जेना आब गीड़ि लेत, चण्डिकाक माए कोना एकसरि रहैत होइतीह? चिन्तामणि बाबू उर्द्धश्वास खिचैत धैर्यू सँ पुछलथिन्ह।

धैर्यू बाबू चिन्तामणि बाबूक कथा सुनि स्वयं धैर्य त्यागै लगलाह, हिनक करुणा पूर्ण स्वरँ हुनको हृदय करुणाक धारा मे यद्यपि डूबि गेलन्हि तथापि सान्त्वना दैत कहलथिन्ह—घबड़ैला सँ कोनो काज हैब असम्भवे, तैं हेतु एखन हमरा लोकनिकँ धैर्य सँ काज लेबाक चाही। जखन डेढ़ मास बितबे कैलैक तखन दू चारि दिन आरो देखि लैह, किछु छौ, नौ कैने जैबह तँ अपनहुँ चिन्ता कम रहतह। आइ हम सी० आइ० डी० C. I. D. औफिस (Office) मे तलास करैत छिऐक, किछुओ समाचार बूझि ली तखन तौं चलो जैबह तँ हम तँ एतहि रहब।

धैर्यू बाबूकँ पता लगौला उत्तर ज्ञात भेलन्हि जे एखन धरि अपराधीक कोनों पता नहिं भेटल अछि, सरकार पूर्ण ध्यानस्थ

अछि, बेसी सँ बेसी तीनि मास मे एकर रिपोट (Report) पठा देल जैत। चिन्तामणि बाबू कार्य भार धैर्यू बाबूकेँ दै, अपने गाम चल ऐलाह।

अपना आङ्गन अबैत चिन्तामणि बाबूकेँ आश्चर्यक ठेकाना नहि रहलन्हि आङ्गन मे फुफड़ी दहिआ लागल, घर मे ताला बन्द, समस्त आङ्गन श्मसानो सँ अधिक भयङ्कर बुझना गेलन्हि। किछु काल किं कर्त्तव्य विमूढ़ छलाह, टोल परोसक लोक कँ पुछ-थिन्ह से स्फूर्त्तिए नहिं भेलन्हि, घरक ताला कँ तोड़ै लगलाह। चिन्तामणि बाबूक घर टोल सँ एकाहुत मे पड़ैत छलन्हि, पछुआ-ड़क सटले बेस पैघ कोटि बाँस, बाड़ी मे रंग विरंगक नेबो, रंग विरंगक केरा, रंग विरंगक तरकारी ओ फूल सब रोपने छलाह। तैँ हेतु बास कनेक बोनाह छलन्हि, मुदा दरबज्जा पर दै टोल सँ बहरैबाक बाट। टोल सँ यद्यपि बहुत कम सम्पर्क छलन्हि, मुदा बाट धैने चल जाइत एक व्यक्ति तालाक ठकठकाहटि सुनि कै पहिने घोल कैलक, जाहि सँ टोलक बहुतो व्यक्ति बेराबेरी एकट्ठा भै गेल। ओकरा सभक समक्ष सब बात जखन फूजल तँ सब आश्चर्य चकित भै गेल। अपना ओहि ठामक वृत्तान्त सुनि आश्चर्य चकित चिन्तामणि बाबू आश्चर्य मे डूबि गेलाह, मुदा ताहू सँ बेसी आश्चर्य भेलन्हि जखन ताला तोड़ि घर फोललाक बाद एक टा चिट्ठी भेटलन्हि। चिट्ठी फोलि पढ़ै लगलाह—

श्रद्धेय श्री चिन्तामणि बाबू !

सादर नमस्कार,—

अपने कँ नीक जकाँ मन हैत अपने काशी गेल छलहुँ, आ' ओतहि हमरा अहाँकेँ साक्षात्कार भेल छल। अपनेक कन्या कँ हम ओतहि देखने छलहुँ, जाहि पर एक टा प्रस्तावो अपनेक समक्ष रखने छलहुँ, जकर उत्तर स्वाभिमान मे भरल अपने जे देने रही से भने अपने कँ बिसरि गेल हो मुदा हमरा एखनहुँ "साते भवतु" जकाँ कण्ठस्थे अछि। हम साधारण मनुष्य सँ किछु अधिक दाबी रखनिहार लोक छी। आइ हमरा बड़ सुन्दर सुअवसर प्राप्त भै गेल आ' अपनेक कन्या कँ पाबि ओइ हम कृतकृत्य छी। आब रहल स्वार्थ सिद्धक बात जौं अपने कलपब तँ ताहि कलपाना सँ हमर अनिष्ट हैत। हम जनैत छी जे आब हम अपनेक सम्बन्धि-वर्गक लोक भेलहुँ। हमर अनिष्ट अपनहुँ कँ कल्याण-कर नहिं। अपने निश्चिन्त रही, जखनहि सौजन्य पूर्ण व्यवहार सँ अपने हमर भेट करै चाही तखनहिं हम अपने सँ काशी मे भेट कै सकैत छी। जाहि व्यक्ति पर अपन दोष थोपि हम चल ऐल छी ताहि व्यक्तिक खोज पुछारि करबन्हि। विशेष कुशल। इति शुभम्।

अपनेक
"बैजू"

चिन्तामणि बाबू चिट्ठी पढ़ि मूर्च्छित भै गेलाह। हुनका आँखिक सोझाँ समस्त काशीक विकरालता नाचि उठलन्हि, अपना मूर्खता पर अपना कँ धिक्कारै लगलाह, सहसा मुँह सँ बहरैलन्हि—चण्डी ! आब तोँ कतै हैबह वन्सी मे बाझल माछ

जकाँ छटपटाइत ? आह' ईश्वर ! कहाँ धरि हम तोहर पता लगा सकैत छी ?

चिन्ताक्रान्त चिन्तामणि बाबू कँ संसार मे अपन क्यौ नहिं देखना गेलन्हि, जेम्हरे ताकथि तेम्हरे अन्हार बुझना जाइन्हि। उचिते—

"चिता चिन्ता समाख्याता किन्तु चिन्ता गरीयसी"

अपना परिवारक चिन्ता सँ अधिक आब नरेन्द्रक चिन्ता भै गेलन्हि-"ओ भक्त, ओ निराश्रय, दीन, हीन कतै हैत ? ओकरा जतहि पुलिस देखतैक ततहि पकड़ि लेतैक। आब हम कतै जाइ ? पहिने चण्डिकाक खोज पुछारि करू की चण्डिकाक माए केर, अथवा एहि निरपराधक ठोंठ सँ फाँसी छोड़ाउ ? हा जगदम्ब !

× × ×

उमेशबाबू सपरिवार गाम पहुँचलाह। घरक स्थिति देखि क्रुद्ध भै गेलाह,। परिवारक लोक सब कतै गेल, घर आङन कँ छोड़ि केवल स्त्रीगण पर गृहस्थीक भार दै अपने कतहु चल जैबाक अभ्यास तँ भोला कँ नहिं छलन्हि तखन एना किऐक ? अपन छोट भाएक नाँव धै सोर करै लगलथिन्ह भोला छह हौऽऽऽ भो······लाऽऽऽ ! उमेश बाबूक शब्द सुनि भरि टोलक लोक जमा भै गेल। सब आश्चर्य मे पड़ल छल। क्यौ बूढ़ पुरान व्यक्ति उमेश बाबू कँ कहलथिन्ह–उमेश बाबू अहाँ कँ देखि हर्षें ठाँव नहिं अछि, एहन आश्चर्य तँ कहिओ नहिं सुनने छलहुँ।

उमेश बाबूकँ सेहो बड़ आश्चर्य भेलन्हि जखन बिनु बजौनहि

भरि टोलक बाले बच्चेँ हिनका ओहि ठाम ढेरी लागि गेल, आश्चर्य जनक मुद्रा बनबैत पुछलथिन्ह—से किऐक ?

"आहि रे बा····· सुनलहुँ जे टेन उनटि गेलैक, अहाँ बालेँ बच्चेँ ओही मे·········

"खून भै गेलहुँ ?

"तऽ, हमरा सब तँ सैह सुनल, देखै छी ओही शोकेँ भोला बाबू संसार छोड़ि देलन्हि, बीरु बाबू बताह भै गेलाह।

भाएक मरण सुनि उमेश बाबूक हृदय मे हाहाकार मचि गेलन्हि, आँखि सँ बसोधारा नोर बहै लगलन्हि, किन्तु बृद्ध लोक कोनहुना धैर्य धारण कै बजलाह—भोला मरि गेल ? हा ईश्वर ! आब एहि बुढ़ारी मे, एहि परिबारक भार, एहि दुर्बल कान्ह पर कोना बहन कै सकैत छी ? वीरेन्द्र बताह भै गेलाह से के कहलक अछि ?

"सुनबे कैल जे पटना सँ तार ऐलन्हि अछि।

उमेश बाबूकेँ एहि षड़यन्त्रक किछु अर्थे नहि लगन्हि, कहलथिन्ह—हम परसू पटना मे वीरेन्द्र भेट कै तखन ऐलहुँ अछि, वीरेन्द्र हमरा सब केँ जहाज पारकै सोनपुर मे गाड़ी पर चढ़ा' कै तखन घुरलाह अछि, आ' एहि ठाम यैह सुनैत छी जे ओ बताह भै गेलाह, हम सब खून भै गेलहुँ, एहि मे अवश्य कोनो षड़यन्त्र अछि। नरेन्द्र कतै अछि ? क्यौ कहलकन्हि–हुनका सुनै छी जहल मे बन्न कैने छन्हि। एकतँ बुढ़ारी वयस दोसर एतेक दूरक यात्रा सँ चूरमार देह, तेसर आकस्मिक ई घटना,

सब संयोग लागि गेला सँ उमेश बाबू कँ ज्वर आक्रान्त कै देल-कन्हि, क्रमहिं ओ ज्वर बढ़ै लागल, बढ़ैत बढ़ैत एहन परिस्थिति उत्पन्न भै गेल जे लोक कँ हिनक बाँचव असम्भव बुझना गेलैक। अन्त मे वीरेन्द्र बाबू क पटना तार देल गेलन्हि।

वीरेन्द्र बाबू तार देखैत गाम बिदा भेलाह। स्टेशन पर टिकट कटा' जखन जहाज पर चढ़ै ऐलाह तखन जहाज कँ फुजबा मे एक डेढ़ मिनट समय छलैक, तै धड़फड़ाइत जहाज दिस चल जा रहल छलाह, आ' ओही जहाज सँ नरेन्द्र कँ पकड़ि पुलिस पटना अनने छलन्हि तै ओही ठाम नरेन्द्र कतबहि मे पुलिसक लग चुपचाप ठाढ़ छलाह। नरेन्द्र कँ देखितहिं वीरेन्द्र बाबू क्षुब्ध भै गेलाह, किन्तु हुनका आश्चर्य लगलन्हि एहि बातक जे ई तँ जहल मे छलाह तखन बहरैलाह कोना? किन्तु समयक अतिशय अभाव, गामक ओ आतुर तार तै हेतु वीरेन्द्र बाबू उत्कट अभिलाषा रखितो नरेन्द्र सँ गप्प नहिं कै सकलाह। नरेन्द्र जखन वीरेन्द्र कँ देखलथिन्ह तँ हुनका बड़ आश्चर्य भेलन्हि, मन मे भेलन्हि "सुनने छलहुँ जे भाइ बताह भै गेलाह, मुदा ई कुशल पूर्वक अपन काज करैत छथि" तखन एहि मे कोनो षड़यन्त्र बुझना जाइत अछि। मुदा एतेक विचार उत्पन्न भेलो उत्तर समयक अभाव, एक दोसर सहोदर कँ गर्दनि मे गर्दनि जोड़बाक, आकुल मनक व्याकुलता व्यक्त करबाक अवसर नहिं देलक। हाय रे अभाव! तोहरे प्रसाद सँ कर्मठ सँ कर्मठ प्रसन्न सँ प्रसन्न व्यक्ति अपन कर्मठता, अपन प्रसन्नता तोहरा ज्वाला

से भस्मसात कै देछ।

वीरेन्द्र बाबू जा' धरि गाम पहुँचलाह तावत उमेश बाबू आङन मे तुलसी चौरा तर "अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त-मध्यानि भारत ! अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परिदेवना" वला गीता वाक्य सुनि रहल छलाह, आङन मे सभक आँखि नोर सँ भरल जाइत छल, चण्डिका उमेश बाबू कँ गंगाजल पिऐबाक हेतु गंगाजली लाबै घर गेल छलीह।

वीरेन्द्र बाबू आङन पहुंचलाह, आ' चण्डिका गंगाजली लै घर सँ बहरैलीह 'एक दोसरा कँ देखि आश्चर्य मे डूबि गेल। चण्डिका अपन स्वामी वीरेन्द्र बाबू कँ देखि माँझे आङन मे लुढ़ दै बैसि गेलीह। वीरेन्द्र बाबू कँ किछु फुरबे नहिं कैलन्हि। ई घटना देखि आङन भरिक लोक अकचका' उठल।

अन्त मे बात फूजल जे चण्डिका वीरेन्द्र बाबूक धर्मपत्नी थिकथिन्ह, जनिका हरिद्वार सँ घुमै काल उमेश बाबू अचैतन्य अवस्था मे टमटम पर लादि अपना ओहि ठाम लै अनने छलथिन्ह। सब आश्चर्य मे पड़ि गेल।

——:❀:——

—चतुरता—

बैजू अन्धकार कैँ चीरैत पहुँचल एक डिबिआक समीप। नाक परक घाम चूबि ठोर पर ऐलैक, आ मुँह फोलने हँकमैत छल, जाहि सँ ओकर श्रम मूर्त्त भै गेल होइक," से जानि पड़ैत छलैक। ओकरा हृदय में चण्डिकाक कठोरता, आ' आँखि में ओकर कोमल कमनीय रूप नाचि रहल छलैक। मुख मुद्रा गम्भीर, कपार परक स्पष्ट तीनू रेखा ओकरा मानसिक द्वन्द्व कैँ चित्रित कै देने छलैक, ओ सोचि रहल छल 'आब हमर कोन बाट हैत' उद्देश्य च्युत व्यक्ति कैँ जीवनक बाट एहिना भुतलाइत छैक। अन्त मे ओ पुनः काशीक बाट धैलक।

× × ×

शारदाक पिता नाम छलैन्हि गौरीकान्त। पं० गौरीकान्त छोट छीन जमीदार छथि। पिताक एक मात्र सन्तान, पिता बड़े विचारक, समाज मे प्रतिष्ठित, अपना विवेक सँ कुल परम्परागत मर्यादाक रक्षा करैत, समाज प्रिय लोक छलथिन्ह। शिक्षा सँ प्रेम छलैन्हि, बेटा कैँ काव्य दिस अभिरुचि देखि काव्यक अध्ययन करौने छलथिन्ह। बेस समृद्धिपूर्ण गृहस्थी बेटाक सिर छोड़ि साठिम वर्ष मे स्वर्गीय भै गेलथिन्ह। गौरीकान्तो क्षीण काय, गौर वर्ण, बड़े सात्विक विचारक लोक। दैव संयोगे एक

मात्र कन्या भेलथिन्ह तखनहिं स्त्री शान्ता भै गेलथिन्ह। कतबो लोकक कहला उत्तर ओ दोसर विवाह करब नहिं पसिन्न कैलन्हि। एक मात्र कन्या शारदा। ओकरा विवाहक घटना, उमेशबाबूक माँझिल बालक नरेन्द्रक संग स्थिर भै गेल छलन्हि, सिद्धान्त कैल राखल छलन्हि, अग्रिम अग्रहण मे विवाहक दिन स्थिर कैने छलाह। शारदा कैँ ई समाचार ज्ञात नहिं छलन्हि। पण्डित जी 'नरेन्द्र' नाम सुनि चौंकि उठलाह। ओहि बन्धन सँ नरेन्द्रकँ मुक्त करबाक हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ भै गेल छलाह। अतः आइ पटनाक तैआरी मे छथि। शारदा एकसरि गाम पर की करैत रहतीह, आ' रहतीह, कोना ? तैं पिताक वस्तु जातक संग हुनको वस्तु जात मोटरी बन्हा' गेल।

यद्यपि स्वयं पण्डितजी साधारण वेष भूषा मे रहथि। गाड़ी मे 'थर्डे क्लाश' मे चलथि। तथापि कन्या छलथिन्ह संग आ' रेलक वेसी मेला देखि कै, सेकेण्ड क्लाशक टिकट कटौने छलाह।

गाड़ी मे जखन बैसलाह तँ ओहिमे एक व्यक्ति मात्र छलाह यद्यपि ओकर कृत्रिम मुख मुद्रा सँ ओकरा अन्तः करणक कालिमा कैँ जेना ओकरा मुँह पर चित्रित कै देने होइक से बुझना जाइत छलैक। मुदा अत्यन्त विनम्र स्वरँ पण्डित जी कँ ओहिना बैसबाक आग्रह करै लगलन्हि जेना कतेको दिन पूर्व सँ ओकरा पण्डित जीक संग भरि ठेहुन, भरि छाबा होइक। ओकर ई सहृदयता देखि पण्डितजीक मनक शंका निवृत्त भै गेलन्हि। मोटरी चोटरी कँ सरिआ कै राखि पण्डित जी बैसि गेलाह। हिनका बैसिते

ओ प्रश्न कैलकन्हि—अपने कतै जैब ?

पण्डित जी—पटना ।

अपरिचित—पटना मे अपने नोकरी करै' छी ?

पण्डित जी—नहिं । कार्य विशेषेँ जा रहलहुँ अछि ।

अपरिचित—ई अपनेक के थिकीह ?

पंण्डित जी—कन्या ।

अपरिचित—कन्याक संग किएक जाइत छी ? ओहि ठाम क्यौ तेहेन सम्बन्धिक लोक छथि ?

पण्डित जी—नहिं, सम्बन्धी तँ नहिं छथि मुदा......

अपरिचित—तखन ? आइ कालिह यात्रा बड़े कष्टकर होइत छैक दोसर की तँ ई शहर सब बड़ दूषित अछि। एहेन फेरो काशी । जतहि पड़ि रहब ततहि कैलाश ।

पण्डित जी—अहाँ काशी गेल छी ?

अपरिचित—भला कहू, आब तँ घर आङन भै गेल ।

पण्डितजी—अहाँक घर कतै अछि ?

अपरिचित—पहिने तँ देहाते मे छल मुदा आब काशिए ।

पण्डित जी—से कोना ?

अपरिचित— हमर एकटा दोकान होइत अछि, आब सपरिवार ओतहि रहैत छी । चलल जाओ ने काशी। हमर घर आङन पवित्र कै देल जैत ।

पण्डितजी— एखन छीहे तेहन आवश्यक कार्य मे, नहिं तँ भला, बाबाक दरबार मे ककरा मन नहिं लगतैक ?

अपरिचित— कोन एहेन आवश्यक कार्य अछि ?

पण्डितजी नरेन्द्रक किछु परिचय दैत अपन समाचार सुना देलिथन्ह। नरेन्द्र' ई नाम सुनिते बैजू कँ देह सुलुकि गेलैक। मनहिं मन सोचै लागल–ई तँ हमरे बाटक काँट थिक, एकरा बाट सँ कात करैत जौँ चण्डिकाक बदला मे एही कन्या कँ लै चलि दी तँ कोन क्षति ?

पुनः बैजू एकबार पढ़ै लागल। आ' पण्डितजी से हो बेग मे सँ एकटा पोथी बहार कै पढ़ै लगलाह, आ' शारदा दोसर बेंच पर सूति रहलीह।

पोथी आ' निद्राकँ कोनो शत्रुता छैक की हमरा अभ्यास अछि, जखनहिं पोथी हाथ कै लिअऽ कि आँखि पर निद्रा नाचि उठतीह। पोथी पढ़ैत पढ़ैत पण्डितजी निद्राभिभूत भै गेलाह। बैजू ई अवसर पाबि शारदा कँ मूर्च्छित करबाक हेतु कोनो गैसक प्रयोग कैलक आ' पण्डितजीकँ छूरा सँ घायल कै हुनके चद्दरि सँ हुनका झाँपि सोनपुर मे शारदा कँ उठा ट्रेन बदलि लेलक। पण्डितजी पड़ले रहलाह , बैजू शारदाक संग आगाँ बढ़ि गेल। किछु कालक उपरान्त ठंढा बसात लगला सँ चैतन्य भेलन्हि तँ एमहर ओमहर अपना पिता कँ तकलन्हि। अन्त मे नहिं देखि, बैजू सँ पुछलथिन्ह हमर दादाजी कतै छथि ? बैजू स्वाभाविक मुद्रा मे उत्तर देलकन्हि एक बड़ आवश्यक काजेँ पछिले स्टेशन पर उतरि गेलाह। अहाँ चलू हम पटना मे अहाँ के कोनो ठाम डेराक ठीक-ठौर कै देब तखन काशी जैब।

शारदा मनहिं मन सोचलन्हि—की ई सम्भव थीक जे दादाजी हमरा सुतले छोड़ि अपने कोनो काजक हेतु टेन छोड़ि देथि ? ई अवश्य कुटिल स्वभावक लोक अछि एहि मे कोनो अवश्य चक्र चालि छैक। सहसा देह सिहरि गेलन्हि, आब की करबाक चाही से फुरबे नहिं करन्हि। बहुतो काल धरि चलैत गाड़ीक खिरकी सँ क्षितिज पर आँखि गड़ौने विचारधारा मे बहैत रहलीह। अन्त मे किछु जेना स्फूर्त्ति भै गेलन्हि। साहस बान्हि बैजू सँ पुछलथिन्ह अहाँक की नाम थिक ?

'हमर नाम तँ थिक "वैद्यनाथ" मुदा लोक मे बैजू सैह प्रसिद्ध अछि।

शारदा— बड़ सुन्दर, अपन नाम वैद्यनाथ आ' विश्वनाथक शरण मे रहैत, ई बड़ पैघ भाग्य थीक।

बैजू निर्निमेष दृष्टिएँ शारदाक रूप माधुरी पर मुग्ध, ताकि रहल छल। शारदा कहलथिन्ह—छैक जे "समाने शोभते प्रीतिः" से कोनो बेजाय तँ ने, दादाजीक संग जेना हमर मन अकछल रहैत अछि।

बैजू— से किऐक ?

शारदा—दादाजी वयस्क छथि हुनक विचार प्रौढ़ छन्हि, मुदा हमरा सब कँ ओ एखन ओतेक प्रिय नहिं लगैत अछि।

बैजू— हूँऽ जीवन मे किछु आनन्दोक महत्व छैक आ' से सब अवस्था मे लोक कँ नहिं भेटैत छैक। ओकरो एकटा सीमिते बयस होइत छैक।

शारदा कनेक गम्भीर भावेँ कहलथिन्ह—हमरा किछु कहबाक इच्छा अछि मुदा लाजेँ नहि कहि सकैत छी।



बैजू—हमरा सँ कोन लाज, कहू।

शारदा—हम अहाँ कतहु अन्तै चलब।

ई शब्द बैजूक हृदय मे आनन्दक कोन लहरि उठा देलकै' से एहेन शब्द सुननिहारे व्यक्ति अनुभव कै सकैत छथि। मूर्ख बैजू सब घाटक पानि पीबि चुकल छल, मुदा एक साधारण बालिकाक भोलामा पट्टी सँ आइ धरि भेंट नहिं छलैक, कहल छैक—"स्त्रियाश्च-रित्रम् पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः" बड़े प्रसन्न होइत आह्लाद पूर्ण गद्गद शब्दें बाजि उठल—तखन तँ हमरा संसारमे कृष्ण पत्त कहिओ नहिं हैत।

शारदा स्वभावगत चञ्चलताक कृत्रिम अभिनय करैत बैजू सँ कहलथिन्ह—हमरा बड़जोर भूख लागल अछि।

बैजू—हँऽ हँऽ अगिला स्टेशन छपरा थिकैक, ओहिं ठाम गाड़ी किछु काल अँटकैत छैक, ओहि ठाम निचैन सँ जलपान कै लेब।

शारदा—छपरा एही रस्ता मे पड़ैत छैक? हमरा छपरा शहर देखबाक इच्छा होइत अछि।

बैजू—कोनो त्तति नहिं. एक ट्रेन छोड़ि देब।

गाड़ी छपरा पहुँचि गेल। बैजू क पेट मे अपूर्व गुदगुदी लागि रहल छलैक। शारदा कँ विश्राम गृह (वीटिंग रूम) मे बैसा' बैजू जलपानक संग किछु पूर्ण आकर्षक वस्तु किनबाक हेतु बजारक बाट धैलक। शारदा अवसर पाबि स्टेशन पुलिस कँ खबरि देलथिन्ह। बैजूक नाम सुनि पुलिस फानि उठल, कह-

लकन्हि—बैजू तो बहुत दिनों से फरार है, उसकी गिरफ्तारी के लिये सरकार एक हजार इनाम घोषित कर चुकी है। छपरा हत्याकाण्ड का पहला मुजरिम वही है। ओहि ठाम सँ आबि सोनपुर फोन सँ पुछबौलथिन्ह तँ उत्तर ऐलन्हि जे सेकेण्ड क्लाश मे एकटा यात्री घायल पौल गेलाह अछि, हुनका एहि ट्रेन सँ पटना अस्पताल पठा देल गेलन्हि अछि। समाचार सुनि शारदाक अन्तः करण पिताक अवस्थाक अनुभव कै कापि उठलन्हि; मनहि मन गोसाउनि कँ जोड़ा छागर कबुला कैलन्हि। किन्तु चित्त एतेक विह्वल भै गेलन्हि जे ओहि ठाम सँ कोनहुना घूमि 'वोटिङ रूम' धरि ऐलीह आ' पुलिसकँ आगाँ की करबाक चाही एहि प्रसङ्ग में पूछै लगलथिन्ह।

बैजू, प्रसन्न चित्त, भोजनीय पदार्थक संग कोठली मे पैर देलक, आ' ओकर मन सन्न रहि गेलैक सम्मुख लाल मुरेठा देखि कै। बहुतो दाव पेंच जिनगी मे सिखलक मुदा आइ "उल्था" की "धोबिआ पाट" दाव लगलैक जे मुहे भरेँ खसैत चारू नाल चित्त भै गेल। पुलिस हाथ मे हथकड़ी लगबैत कहल कैक—आप अभी इस लड़की की चोरी के अपराध मे गिरफ्तार किये जाते हैं। एक साधारण कन्याक एहि चतुरता पर, कठोर हृदय रहितो, अन्तःकरण मे अकस्मात् ई शब्द प्रतिध्वनित भै गेलैक "वाह रे चतुरता"। किन्तु भावी आशंका सँ देह सिहरि गेलैक; पिजड़ा मे बन्द बाघ जकाँ गुम्हड़ि कै रहि गेल।

—❀::❀—

—रहस्योद्घाटन—

चिन्तामणि बाबूक आश्चर्य सूचक मुद्रा सँ सब आश्चर्यान्वित छले, तावत दरबज्जा पर एक टा नौआ पहुँचलन्हि। छैक एक टा फकड़ा—रे भाइ तीन सबद मे रहिहैं; मनुख जाति मे नौआ; आ' पच्छी मे कौआ; गाछ बिर्छ मे भौआ" रे भाइ तीन सबद मे रहिहैं" से जातिक नौआ, हाथ कै चटपट पाता दैत चटपटै लागल। जावत चिन्तामणि बाबू ओकरा किछु पुछबाक हेतु मुँह सुरफुरौलन्हि तावत ओ कहि उठलन्हि—मालिक! हमरा बिदाइ आ' "सिदहा" दिआ दू, हम कत्ते ठिना जैब। काल्हिए बुढ़ाम जी केर। न'ह केस छिऐन्हि, फेनो गामो परक काम काज देखै पड़तइ।

चिन्तामणि बाबू अन्यमनस्क छलाह; कनेक साकांक्ष होइत बजलाह—ककर न'ह केश ?

नौआ ठोर तरक तमाकू फेकैत कहलकैन्हि 'बूढ़ा मालिक केर, वीरेन बौआ दस दिना सँ गामे छथिन्ह; जइ दिना बूढ़ा मालिक मुइलखिन, ओही दिना भोरे मे गाम पहुँचलखिन्ह; पहिने तँ घोल भऽ गेल रहइ जे टेन उनटि गेलइ ताही मे खून भऽ गेलखिन्ह; मुदा बाबा बैजनाथ रच्छ्रा रखलखिन्ह। गाम पर जे भोलाबाबू मरि गेलखिन्ह से बात सुनिते देह मे भुलनी पैसि गेलन्हि।

तीन दिनुक बाद सहजहिं विदाइए भऽ गेलखिन। आ' सरकार! एक गो बात कहबे ने केलहुँ, सरकारक कन्या कें बूढ़ा मालिक बाटे मे बेहोस भेल देखलखिन्ह तँ बिनु चिन्हनहिं उठाक सङ्गे नेने गेलखिन्ह, पहिने की ककरो ई बात बुझल रहइ, ऊ तँ बीरेन बौआ कँ गाम पहुँचला पर सभ बात खुगलइ"।

चिन्तामणि बाबू लिखित चित्र सन भेल ओकरा मुँह सँ ई समाचार सुनैत रहि गेलाह। ई समाचार आ' नरेन्द्रक जीवनक घटना, दूनू जेना साकार भै गेल होइन्हि। आब बूझि पड़लन्हि जे एहि मे कोनो रहस्य छैक। किन्तु चिन्ताक अथाह सागर मे डूबल चिन्तामणि बाबू कँ चण्डिकाक कुशल वार्ता जेना सहारा भेटि गेलन्हि, आनन्दाश्रु सँ अङपोछा भीजि गेलन्हि। नौआ कँ बिदा कै अपनहुँ सासुरक बाट धैलैन्हि।

चण्डिकाक माए कँ एकर कोनो पता नहिं छलन्हि, खाली चिन्तामणि बाबूक चिन्ता छलन्हि। से आइ अकस्मात् चिन्तामणि बाबू कँ देखि बड़ प्रसन्न भेलीह मुदा जखन चण्डिकाक समाचार कान मे पड़लन्हि तँ भरि इच्छा कनलीह। फेर कानि खीजि जैबाक ओरिओन करै लगलीह। तेसर दिन चिन्तामणि बाबू विदागरी करौने गाम पहुँचलाह। झट भार दोरक ओरिओन कै द्वादशाहक सन्ध्या काल जमायक दलान पर पहुँचलाह। जमाय घाट पर सँ ऐल छलथिन्ह, चुमौन होइत छलन्हि। तकर बाद ब्राह्मण भोजनक हूलि उठि गेल। एही सब मे राति शेष भै गेलन्हि, चिन्तामणि बाबू कँ चण्डिका सँ भेट नहिं भेलन्हि,

कच्छमच्छ कै राति बितौलन्हि, प्रातःकाल पाहुन पड़कक बिदाइ में विलम्बक कारणे मनक व्याकुलता बढ़ले जाइन्हि, एक मात्र सन्तान तकरा पर बीतल विपत्तिक स्मरण कै चिन्तामणि बाबूक धैर्य नहिं रहैन्हि, होइन्हि जे कखन चण्डिकाक मुँह देखथन्हि।

हाय रे ईश्वर! हाय रे मोह! नश्वर संसार कँ अपन विस्तृत जाल में बझा कै रखबाक अपूर्व सामर्थ्य तोरा मे। सुखक दिन कोना अबैत छैक, आ' चल जाइत छैक से लोक कँ स्मरण नहि रहैत छैक, मुदा दुःखक एक क्षण एक युग बुझना जाइत छैक। विपत्तिक मारल चिन्तामणि बाबूकँ आब क्षण क्षण एक युग जकाँ बुझना जाइन्हि। विपत्तिओक दिन मनुष्य बिताइए लैत अछि—"चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानिच सुखानिच" पाहुन पड़ककँ बिदा कै जखन वीरेन्द्र बाबू निश्चिन्त भेलाह तखन सविस्तर वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह। जखन चण्डिकाक भेट करै गेलथिन्ह तँ चिन्तामणि बाबू कँ देखिते चण्डिका हबोढकार भै कानै लगलीह; थोड़ेक काल तँ चिन्तामणि बाबू अपनहुँ संग देलथिन्ह मुदा फेर आश्वासन दै कोनहुना चण्डिका कँ चुप कैलन्हि। तकर बाद चण्डिका कहै लगलथिन्ह—बाबू! हम ओकरा काशी मे देखने रहिऐक, हमरा सँ अहाँक' नाम पुछलक; फेर डेराक पुछारी कैलक, हम की जानै गेलिऐक जे एहि पापीक हृदय मे की छैक? दोसर दिन सन्ध्याकाल जखन अहाँ बाबाक दर्शन करै चल गेलहुँ तँ ई ऐल; माए भानस करैत छलि, हम बहरिया कोठली मे पोथी पढ़ै' छलहुँ। अबिते पहिने अहाँक पुछारी

कैलक, तकरबाद माएक; तखन हमरा पूछै लागल 'अहाँक विआह भेल अछि' ? हमरा एहि प्रश्न पर तामस आ' लाज दूनू भेल हम पट दै केबाड़ी बन्न कै भनसा घर चल गेलहुँ। मुदा लाजेँ ई बात ककरो नहि कहलिऐक। दोसर दिन देखलहुँ अहाँकेँ अपने गप्प करैत। चिन्तामणि बाबू केँ आब काशीक घटना एक एक कै आँखिक सोझाँ नाचि गेलन्हि, बजलाह—हँऽ तैँ ओकरा ओहि दिन किछु चिन्हिऐक मुदा कतबो मन पाड़लहुँ, नहिं मन पड़ल।

फेर चण्डिका अपन उपाख्यान प्रारम्भ कैलन्हि—जाहि दिन ओ अपना ओहि ठाँ पहुँचल ताहि दिन ओकरा देखिते हमर जी सन्न रहिगेल देह थरथर काँपै लागल तकरबाद की भेलैक से किछु नहि बुझलिऐक। अहाँ ओकरा चिट्ठी लीखिकै किऐक देलिऐ' ?

चिन्तामणि—कोन चिट्ठी ?

चण्डिका—जाहि मे लिखने रहिऐक जे तोँ अपने हिनका संग चल जैहह, माए केँ नैहर बिदा कै दिहौन्हि आदि आदि।

चिन्तामणि—है चण्डी ! कथी लै हम किछु लीखि कै देबैक। अस्तु ! जगदम्बाक कृपा सँ आब सब कल्याणे कल्याण। कतहु प्राण बाँचि गेलहु, तँ अपने घर मे; अपने लोक लग।

आब चिन्तामणि बाबूकेँ नरेन्द्रक चिन्ता भेलन्हि "वास्तव मे ओ के छल; कहाँ सँ ऐल; एहि घटना सँ ओकरा कोन सम्बन्ध छैक; अथवा ओ·········। एहसा ओहि ठाम सँ उठि, चिन्तामणि बाबू वीरेन्द्र बाबूक लग पहुँचलाह। हुनका आब बूझि

पड़न्हि, जे हमरा सँ पड़ पैघ पाप कैना गेल, "अपन असावधानता सँ एक गरीब व्यक्तिक ग'र मे फाँसी पड़ि जाइक," ई कहाँ धरि न्याय संगत ? वीरेन्द्र बाबू सँ सविस्तर वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह। वीरेन्द्र बाबू कं जहाज पर साक्षात्कार भेल छलन्हि, ओहो ई घटना सुना देलथिन्ह। अन्त मे ई बात फूजल जे पटना मे जखन ओ छलाह, तखन वीरेन्द्र बाबूक ओहि ठाम सँ नरेन्द्रक फोटो माङि कै अनने छलन्हि, जे चिन्तामणि बाबूक हाथ कै देने छलन्हि; जाहि फोटो द्वारा नरेन्द्रक गिरफ्तारी सुलभ भै गेलन्हि।

वीरेन्द्र बाबूक संग चिन्तामणि बाबू पटना ऐलाह; नरेन्द्रक खोज—पुछारि प्रारम्भ भेल।



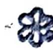
—उपसंहार—

एतबा कथा मानै पड़त जे पाप रूपी भयङ्कर आगि सुनगिकै एक दिन प्रज्वलित भै उठैत छैक, आ' ओहि मे प्राणी जरि कै भस्म भै जाइत अछि, सत्यक विजय ईश्वर कैं करैक पड़तन्हि, बबूरक गाछ रोपब तँ आम नहिं पैब, खाधि खुनब तँ खत्ता खसब, आगि उठैब हाथ कै तँ तरहत्थी पकबे करत, योगी सँ धुरखेड़ि करब तँ नरक क भोग करै पड़त।

× × × ×

बैजूक पापाग्नि भुस्साक आगि जकाँ नहूँ नहूँ धुँआइत, पजरैत आब लहरै लागल छलैक। छपरा सँ बैजू पटना आनल गेल। नरेन्द्रो पटने मे सड़ैत छथि। चिन्तामणि बाबू आ, वीरेन्द्र, नरेन्द्रक खोज-पुछारि मे अस्तव्यस्त पटने मे छथि। पं० गौरीकान्त अस्पताल मे खाट पर पड़ल कखनहुँ आँखि उठा, एहि नश्वर संसार कैं मुक्त नयन सँ देखि, नेत्र पुट बन्द कै लैत छथि। मानसिक वेदना शारीरिक वेदना सँ अधिक छन्हि, यद्यपि प्राण बँचवाक आशा डाक्टर लोकनि कैं नहिं छन्हि तथापि सब चेष्टा मे लागल छथि। शारदा कैं अपना पिताक दुरवस्था, अपना घर आङ्नक परिस्थिति, नरेन्द्रक संग कैल प्रतिज्ञा,

नरेन्द्रक ओ दीनता भरल करुण आह्वान एक संग मानस पट पर सिनेमाक चित्र जकाँ नाचि उठैत छन्हि, तँ हलाल कैल मुर्गी जकाँ छटपटा' उठैत छथि।

आइ जजक सामने सब स्पष्टी करण भै गेल। पहिने नरेन्द्रक मोकद्दमा फूजल, मुद्दइ सुलहनामा पेश कैलन्हि। किन्तु सरकारी घरक अपराधी तँ छलाहे, से हिनका पर लगले रहलन्हि। शारदा कँ एक हजार पुरस्कार भेटबाक रहन्हि, बैजू कँ गिरफ्तार करैबाक चतुरता मे। हिनक वयस आ' हिनक चातुरी एवं दृढ़ता देखि हाकिम दंग छल। शारदा हाकिमसँ किछु प्रार्थना करबाक हेतु उत्सुक भेलीह, तँ हाकिम बड़े प्रसन्नता पूर्वक सुनबाक हेतु उद्यत भेलथिन्ह। शारदा हाकिम सँ कहलथिन्ह जे हमर पुरस्कार दण्ड मे राखि, नरेन्द्र सरकारी दोष सँ मुक्त कै देल जाथि। हाकिम स्वीकार कै लेलन्हि। तकर बाद बैजूक मोकदमा फुजलैक। ओ बुझलक जे चण्डिका, शारदा, नरेन्द्र ई तीनू हमरा हाथ सँ छिटकि गेल, छपराक हत्योकाण्ड हमरा कपार ठोकले रहल, तखन एकर सब रहस्यक उद्घाटन सविस्तर किऐक नहिं भै जाए। अतः ओकर स्पष्टीकरण करैत ओहो दोष अपने सिर उठा लेलक।

पण्डित गौरीकान्त अन्तिम क्षण गनि रहल छलाह, नरेन्द्रक संग चिन्तामणि बाबू आ' वीरेन्द्र बाबू अस्पताल ऐलाह। नरेन्द्र



कें देखि जेना पण्डित जीकें मुक्ति भेटल होइन्हि तहिना प्रसन्न भेलाह। शारदाक हाथ नरेन्द्रक हाथ मे दैत सर्वदाक हेतु चिर निद्राक कोर मे विश्राम लेलन्हि। पिताक मरण सुनि नरेन्द्र बड़ दुखी भेलाह। ओहि ठाम सँ गया जा' सविधि श्राद्ध समाप्त कैलन्हि।



किछु सम्मति—

कुमार श्रीगङ्गानन्द सिंह जी,
एम०ए० एम०एल०सी०
सचिव-सदन (दरभङ्गा) लिखैत छथि—

'वीरकन्या' मे श्री 'अमरजी' वर्तमान युगमे मैथिल कन्याकेँ आत्मनिर्भर हयबाक उपदेश दय 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' निरूपत करबाक प्रयास कयलैन्हि अछि। कथा स्वच्छ एवं विस्मयोत्पादक अछि, छोट अछि, रोचक अछि। एकर हम स्वागत करैत छी।



प्रो० श्री श्रीकृष्ण मिश्र,
एम० ए० अङ्गरेजी विभाग
(सी०एम० कालेज) लिखैत छथि—

'वीरकन्या' श्रीअमरजीक कथा-साहित्यमे प्रथमे प्रयास थिकैन्हि तथापि कथानक रोचक छैन्हि। एकर घटना वैचित्र्य ओ विस्मयोत्पादकता मे चलचित्रक प्रभाव देखि पड़ैछ। बैजूक धूर्तता ओ शारदाक बुद्धिमत्ता चित्ताकर्षक अछि। मिथिलाक ग्रामीण समाजमे शारदा सन वीर कन्याक बड़ आवश्यकता छैक।

नवरत्न गोष्ठीक प्रकाशित ग्रन्थ—

१– गुदगुदी (कविता) श्रीअमर ॥=)

२– कृषक (ख० काव्य) श्रीमाथुर १)

३– वन-कुसुम (कविता) श्रीराघवाचार्य शास्त्री १)

४– त्रिफला श्रीअमर ।=)

श्रीअमरजीक अग्रिम प्रकाशन—

१– पंचपात्र—

२– युगचक्र—

३– बिदागरी (उपन्यास)

४– जीवन-संगीत (हिन्दी)

पोथी भेटबाक पता—

एम० एल० एकेडमी, लहेरियासराय

मैथिली-मन्दिर, दरभङ्गा

मिथिला बुक-स्टोर्स, लहेरियासराय

साहित्य-मन्दिर, लालबाग दरभङ्गा

—मिथिला प्रेस, दरभङ्गा—